



बहिर्जब कथा बहिर्जब माऊटेन
जन जन विचार

जन जन की बात जन जन तक

जन जन विचार

साप्ताहिक

WEEKLY TRILINGUAL NEWSPAPER

Language : Hindi, Assamese & English
WEBSITE : www.janjanvichar.in

VOICE OF ALL, FOR ALL

WEEKLY

JAN JAN VICHAR



RNI Regd No. ASMUL/25/A2367::Guwahati, Friday, 19 June 2026 :: Year-1 Vol-23 Issue-2 :: शुक्रवार 19 जून 2026। शक संवत् 1948। ज्येष्ठ शुक्ल। पंचमी। :: पृष्ठ-20। मूल्य - 15 रुपए

जन चिंतन
धनेश्वर चौधरी

राम लला से छल

राम मंदिर निर्माण के लिए देश के करोड़ों लोगों ने अपनी मेहनत की कमाई से चंदा दिया था। किसी ने सौ रुपए दिए, किसी ने हजार, तो किसी ने अपनी जीवन भर की बचत का हिस्सा समर्पित किया। यह केवल आर्थिक सहयोग नहीं था, बल्कि भगवान राम के प्रति अटूट श्रद्धा और विश्वास का प्रतीक था। ऐसे में यदि चंदे की राशि में गड़बड़ी या चोरी के आरोप सामने आते हैं, तो सवाल केवल पैसों का नहीं, बल्कि उस विश्वास का है जिसे जनता ने राम के नाम पर सौंपा था।

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि यदि सब कुछ पारदर्शी है तो जांच से डर किस बात का? आखिर जनता को यह जानने का अधिकार है कि उसके द्वारा दिया गया प्रत्येक रुपया कहाँ और कैसे खर्च हुआ। धार्मिक भावनाओं की आड़ लेकर जवाबदेही से बचना किसी भी संस्था के लिए उचित नहीं हो

शेष पृष्ठ 2 पर

अंबुवासी महायोग

मां की अर्चना में डूबा संसार, उमड़ा आस्था का सैलाब



जन जन विचार

... गुवाहाटी

पूर्वोत्तर की आध्यात्मिक राजधानी और शक्ति उपासना के सबसे बड़े केंद्रों में से एक मां कामाख्या धाम एक बार फिर विश्वविख्यात अंबुवासी महायोग के लिए तैयार है। 23 जून से आरंभ होने वाले इस चार दिवसीय धार्मिक आयोजन में इस वर्ष लगभग 10 लाख श्रद्धालुओं, साधु-संतों,

तांत्रिकों और पर्यटकों के पहुंचने की संभावना है। इस विशाल जनसमूह के प्रबंधन के लिए कामरूप महानगर जिला प्रशासन, गुवाहाटी पुलिस, मंदिर प्रबंधन समिति और विभिन्न सरकारी विभागों ने अब तक की सबसे व्यापक तैयारियों का दावा किया है।

कामाख्या मंदिर परिसर में आयोजित संयुक्त प्रेस वार्ता में जिला आयुक्त स्वप्निल पॉल, यातायात पुलिस उपायुक्त जयंत

शेष पृष्ठ 7 पर

साधना के लिए पहुंचे अघोरी

गुवाहाटी। अघोरी साधक भारतीय सनातन परंपरा के एक विशिष्ट शैव संप्रदाय से जुड़े होते हैं, जो भगवान शिव के अघोर स्वरूप की उपासना करते हैं। उनका मूल उद्देश्य भय, मोह, घृणा और सामाजिक बंधनों से ऊपर उठकर परम सत्य की प्राप्ति करना माना जाता है।

अघोरी साधक प्रायः श्मशान घाटों में साधना करते हैं, क्योंकि उनके अनुसार जीवन और मृत्यु दोनों एक ही सत्य के दो पहलू हैं। वे मृत्यु के भय पर विजय पाने और संसार की क्षणभंगुरता को समझने के लिए कठिन तपस्या करते हैं। भस्म लगाना, मौन साधना, मंत्र जाप और ध्यान उनकी साधना का हिस्सा हो सकते हैं।

अंबुवासी मेला के दौरान कामाख्या धाम में देशभर से अघोरी और तांत्रिक साधक पहुंचते हैं। यह समय शक्ति साधना और तांत्रिक अनुष्ठानों के लिए विशेष माना जाता है। हालांकि इनके बारे में कई रहस्यमय और सनसनीखेज बातें प्रचलित हैं, लेकिन अधिकांश अघोरी साधकों का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक उन्नति और आत्मज्ञान की खोज होता है।

यह समझना आवश्यक है कि अघोरी परंपरा को केवल अंधविश्वास या चमत्कारों के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि भारतीय आध्यात्मिक और दार्शनिक परंपरा के एक विशिष्ट पक्ष के रूप में देखा जाना चाहिए। उनकी साधना का केंद्र भयमुक्ति, वैराग्य और शिवत्व की प्राप्ति है।

मेले में पहुंचते हैं किन्नर भी

अंबुवाची मेले में किन्नर समुदाय की विशेष भागीदारी देखने को मिलती है। देशभर से किन्नर मां कामाख्या के दर्शन और शक्ति उपासना के लिए गुवाहाटी पहुंचते हैं। वे धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होकर आशीर्वाद देते हैं। उनकी उपस्थिति भारतीय संस्कृति की समावेशी और विविध आध्यात्मिक परंपराओं का सुंदर प्रतीक मानी जाती है।

अंबुवासी मेला : देवी के रजस्वला होने का पर्व

जन जन विचार

... गुवाहाटी

अंबुवासी मेला देवी कामाख्या के वार्षिक रजस्वला (मासिक धर्म) काल का प्रतीक माना जाता है। यह भारत का शायद एकमात्र बड़ा धार्मिक उत्सव है जो स्त्रीत्व और सृजन शक्ति का उत्सव मनाता है।

तीन दिन बंद रहता है मंदिर

मान्यता है कि इन तीन दिनों में माता विश्राम करती हैं। इसलिए मंदिर के कपाट बंद रहते हैं और नियमित पूजा-पाठ भी नहीं होता।

यहां देवी की मूर्ति नहीं है

कामाख्या मंदिर में देवी की प्रतिमा नहीं, बल्कि प्राकृतिक शिला-रूप में स्थित योनि-कुंड की पूजा की जाती है, जिस पर प्राकृतिक जलधारा प्रवाहित होती रहती है।

पूर्वोत्तर का महाकुंभ



अंबुवाची मेले को 'पूर्वोत्तर भारत का महाकुंभ' भी कहा जाता है। लाखों श्रद्धालु, साधु-संत और तांत्रिक यहां पहुंचते हैं। तांत्रिक साधना का सबसे बड़ा केंद्र

कामाख्या मंदिर भारत में तंत्र साधना का प्रमुख केंद्र माना जाता है। अंबुवासी के दौरान अनेक तांत्रिक, अघोरी और नागा साधु यहां विशेष साधनाएं करते हैं।

मिलता है विशेष प्रसाद

मेला समाप्त होने पर श्रद्धालुओं को 'अंगोदक' (पवित्र जल) और 'अंगवस्त्र' (लाल कपड़े का टुकड़ा) प्रसाद के रूप में दिया जाता है।

कृषि से भी जुड़ा है संबंध

पुरानी मान्यता के अनुसार इन दिनों धरती माता भी रजस्वला होती हैं, इसलिए कई ग्रामीण क्षेत्रों में खेती-किसानी के कार्य

स्थगित रखे जाते हैं।

51 शक्तिपीठों में एक

कामाख्या मंदिर भारत के 51 प्रमुख शक्तिपीठों में से एक माना जाता है और शाक्त परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण तीर्थ है।

दुनिया भर से आते हैं साधक

अघोरी, नागा, बैरागी, तांत्रिक और विदेशी शोधकर्ता भी इस मेले में भाग लेने आते हैं।

आस्था और रहस्य का संगम

अंबुवासी मेला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि असम की संस्कृति, लोकविश्वास, तंत्र परंपरा और स्त्री शक्ति के सम्मान का अद्भुत संगम है।

लोकमान्यता के अनुसार अंबुवाची के दौरान माता के गर्भगृह में चढ़ाया गया सफेद वस्त्र बाद में लाल रंग का हो जाता है, जिसे श्रद्धालु अत्यंत पवित्र मानते हैं। हालांकि यह धार्मिक आस्था और परंपरा का विषय है।

अगले सेना प्रमुख ले. ज. धीरज सेठ

नई दिल्ली। भारतीय सेना को नया नेतृत्व मिलने जा रहा है। केंद्र सरकार ने वर्तमान उप सेना प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ को देश का अगला सेना प्रमुख (चीफ ऑफ आर्मी स्टाफ) नियुक्त करने का फैसला किया है। वे 30 जून 2026 को पदभार ग्रहण करेंगे और वर्तमान सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी

का स्थान लेंगे। उनकी नियुक्ति ऐसे समय में हुई है जब भारतीय सेना तेजी से तकनीकी आधुनिकीकरण, आत्मनिर्भर रक्षा उत्पादन और भविष्य की युद्ध चुनौतियों के अनुरूप खुद को तैयार कर रही है।

लगभग 40 वर्षों की अपनी सैन्य सेवा में लेफ्टिनेंट जनरल धीरज सेठ ने मैदान से लेकर

रणनीतिक योजना तक हर स्तर पर नेतृत्व का परिचय दिया है। उन्हें भारतीय सेना के उन चुनिंदा अधिकारियों में गिना जाता है जिन्होंने सीमाओं पर सक्रिय सैन्य अभियानों का नेतृत्व करने के साथ-साथ सेना के दीर्घकालिक आधुनिकीकरण की रूपरेखा तैयार करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्रधान महालेखाकार कार्यालय में हिंदी कार्यशाला



जन जन विचार ...शिलांग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय, शिलांग में 16 जून को अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का उद्देश्य सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना तथा अधिकारियों-कर्मचारियों को व्यवहारिक हिंदी लेखन एवं

पत्राचार में दक्ष बनाना था।

कार्यक्रम का शुभारंभ वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन) धनलक्ष्मी चौरसिया ने किया। उन्होंने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कर्मचारियों में हिंदी में कार्य करने का आत्मविश्वास विकसित करना तथा कार्यालयी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना है।

कार्यशाला में पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (नेहू), शिलांग के हिंदी विभाग के सहायक प्रोफेसर

डॉ. साईनाथ विठ्ठल चपले ने कार्यालयी पत्राचार, भाषिणी, अनुवादिनी एवं वृहद भाषा मॉडल जैसे विषयों पर व्याख्यान दिया। प्रतिभागियों को इन विषयों का व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में कुल 21 अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का समापन सहायक निदेशक (राजभाषा) मुहम्मद जियाउल हक के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

एक पेड़ मां के नाम : 150 से अधिक पौधे लगाए

जन जन विचार ...शिलांग

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), मेघालय तथा सामाजिक वानिकी प्रभाग, मेघालय के संयुक्त तत्वावधान में 13 जून को लेखापरीक्षा एवं लेखा संपदा, मोतीनगर, शिलांग स्थित आवासीय परिसर में 'एक पेड़ मां के नाम' वृक्षारोपण अभियान आयोजित किया गया।

कार्यक्रम का नेतृत्व प्रधान महालेखाकार एवं संपदा प्रबंधक



लहुंखोथांग हंगसिंग ने किया। इस अवसर पर जिला वन अधिकारी एच. लाटो, वरिष्ठ उप महालेखाकार धनलक्ष्मी चौरसिया, रूपक साहा, स्थापना अधिकारी एक्वारियस मैथ्यू, सहायक निदेशक (राजभाषा) मुहम्मद जियाउल हक

सहित अनेक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

अभियान के दौरान परिसर में 150 से अधिक उपयोगी पौधे लगाए गए। कार्यक्रम का उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ माताओं के प्रति सम्मान व्यक्त करना था।



गुवाहाटी। भारत विकास परिषद की मध्य गुवाहाटी शाखा तथा ब्रह्मपुत्र शाखा द्वारा पर्यावरण दिवस के उपलक्ष्य में गौहाटी विश्वविद्यालय में लगभग 75 पौधे नीम के तथा फलों के पौधे लगाए। इस कार्यक्रम में अध्यक्ष संतलाल मित्रल, श्रीचंद पारीक, विमल अग्रवाल, सचिव अभय घोषाल, सहसचिव राजीव राय, मीडिया प्रभारी तनसुख राठी तथा ब्रह्मपुत्र शाखा के सचिव विद्याधर डेका एवं संयोजक विजित चक्रवर्ती आदि कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

साप्ताहिक राशिफल

19 से 25 जून 2026। विक्रम संवत् 2083-मास : ज्येष्ठ, पक्ष : शुक्ल, तिथि : पंचमी

मेघ : इस सप्ताह काम में तेजी रहेगी और नए मौके मिल सकते हैं। आपकी मेहनत का अच्छा फल मिलेगा। लेकिन गुस्सा और जल्दबाजी रिश्तों और फैसलों को प्रभावित कर सकती है, इसलिए संयम जरूरी है।
वृषभ : आर्थिक स्थिति मजबूत होने के संकेत हैं।

मिथुन : नए काम, जिम्मेदारियाँ और सीखने के अवसर मिलेंगे। करियर में प्रगति संभव है, लेकिन काम का दबाव और थकान बढ़ सकती है।
कर्क : भावनात्मक उतार-चढ़ाव महसूस हो सकता है। काम सामान्य रहेगा लेकिन मानसिक शांति बनाए रखना जरूरी है।

सिंह : आत्मविश्वास और सफलता का समय है। आपको सम्मान, पहचान या नेतृत्व का मौका मिल सकता है।

कन्या : मेहनत ज्यादा करनी पड़ेगी लेकिन परिणाम संतोषजनक रहेंगे। काम का दबाव रहेगा, फिर भी आप अपनी जिम्मेदारियाँ अच्छे से निभा पाएंगे।

तुला : रिश्तों में सुधार और सहयोग का समय है। पार्टनरशिप या टीमवर्क से लाभ मिलेगा।

वृश्चिक : इस सप्ताह चुनौतियाँ सामने आएंगी लेकिन आप उन्हें सफलतापूर्वक संभाल लेंगे।

धनु : नए अवसर मिलेंगे और करियर में आगे बढ़ने के संकेत हैं। व्यक्तिगत जीवन में भी सकारात्मक बदलाव होंगे। लेकिन लापरवाही से बचना जरूरी है।

मकर : स्थिर प्रगति का समय है। परिवार का सहयोग मिलेगा और निवेश से लाभ हो सकता है। सफलता धीरे-धीरे मिलेगी, इसलिए धैर्य बनाए रखें।

कुंभ : नए लोगों से संपर्क और नेटवर्किंग से फायदा मिलेगा। करियर में बदलाव के संकेत हैं, लेकिन जल्दबाजी में निर्णय न लें। सोच-समझकर कदम उठाएँ।

मीन : रचनात्मक कार्यों में सफलता मिलेगी और मानसिक शांति बढ़ेगी। धन लाभ के संकेत हैं। यह समय अपने विचारों और योजनाओं को आगे बढ़ाने के लिए अच्छा है।

सप्ताह के पर्व/त्योहार

20 जून (शनिवार) : स्कंद षष्ठी व्रत

22 जून (सोमवार) : अंबुवासी प्रवृत्ति (रात 9 बजे से)

25 जून (गुरुवार) : निर्जला एकादशी व्रत

26 जून (शुक्रवार) : अंबुवासी निवृत्ति (सुबह 9.25 बजे)



● ज्योतिर्विद आचार्य अखिलेश्वर शुक्ल

भाग्योदय : पहला तल्ला, सेंट्रल प्लाजा, एमएस रोड
फैंसी बाजार, गुवाहाटी-781001 मो.-94350 40387

पृष्ठ 1 का शेर्षांश...

वासकासामसेच्छस्त

सकता। दुर्भाग्य यह है कि हमारे देश में आस्था के नाम पर सवाल पूछने वालों को अक्सर कटघरे में खड़ा कर दिया जाता है। लेकिन लोकतंत्र में प्रश्न पूछना अपराध नहीं, बल्कि नागरिक का

अधिकार है। राम सत्य और न्याय के प्रतीक हैं। इसलिए राम के नाम पर जुटाए गए धन का हिसाब मांगना भी राम के आदर्शों के अनुरूप ही है।

यदि कहीं चोरी हुई है तो दोषियों को बेनकाब किया जाए। और यदि आरोप झूठे हैं तो उन्हें भी तथ्यों के साथ खारिज किया जाए। लेकिन

सच्चाई को दबाने का हर प्रयास संदेह को और गहरा करेगा।

राम मंदिर केवल पत्थरों का भवन नहीं, करोड़ों लोगों की आस्था का केंद्र है। इसलिए राम के नाम पर एक भी रुपए की बेईमानी न केवल कानूनी अपराध है, बल्कि नैतिक विश्वासघात भी है।

जनगणना में नाम भर लिख देने से भाषा नहीं बचती

जन जन विचार

... गुवाहाटी

असम में 2027 की जनगणना से पहले असमिया भाषा और भाषाई पहचान को लेकर चल रही बहस के बीच मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने एक महत्वपूर्ण और स्पष्ट संदेश दिया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि किसी भाषा को केवल जनगणना के आंकड़ों के सहारे जीवित नहीं रखा जा सकता। यदि लोग अपने घरों में उस भाषा का प्रयोग नहीं करते, तो केवल जनगणना प्रपत्र में उसका नाम लिख देने से उसके अस्तित्व की रक्षा नहीं हो सकती।

मुख्यमंत्री का यह बयान ऐसे समय आया है जब चर-चापेरी क्षेत्र से जुड़े कुछ संगठनों द्वारा आगामी जनगणना में असमिया को मातृभाषा के रूप में दर्ज कराने की चर्चा तेज है। वहीं, असम साहित्य सभा के कुछ नेताओं ने आशंका जताई है कि यदि बड़ी संख्या में लोग स्वयं को असमिया भाषी के रूप में दर्ज नहीं कराते हैं, तो भविष्य में असमिया भाषा अल्पसंख्यक स्थिति में पहुंच सकती है।

इन आशंकाओं पर प्रतिक्रिया देते हुए मुख्यमंत्री ने स्पष्ट कहा कि वह इस मुद्दे पर अलग सोच रखते हैं। उनके अनुसार किसी भाषा की वास्तविक ताकत उसकी सामाजिक स्वीकार्यता और दैनिक जीवन में उसके प्रयोग से आती है, न कि केवल सरकारी आंकड़ों से।

असमिया भाषा की पहचान पर मुख्यमंत्री का बड़ा बयान

‘यदि लोग अपने परिवार और घरों में असमिया भाषा नहीं बोलते, तो जनगणना में उसे मातृभाषा लिख देने से क्या लाभ होगा? किसी भाषा को कृत्रिम रूप से जीवित रखने का कोई मूल्य नहीं है,’ मुख्यमंत्री ने कहा।

असमिया भाषा के अस्तित्व पर नहीं कोई खतरा

मुख्यमंत्री डॉ. शर्मा ने यह भी स्पष्ट किया कि असमिया भाषा के अस्तित्व को लेकर अनावश्यक भय फैलाने की आवश्यकता नहीं है। उन्होंने कहा कि असमिया राज्य की आधिकारिक भाषा है और उसकी पहचान किसी जनगणना प्रतिशत पर निर्भर नहीं करती।

उन्होंने कहा, ‘यह पुरानी सोच रही है कि किसी भाषा की शक्ति केवल उसकी जनसंख्या से तय होती है। जब तक असम रहेगा, तब तक असमिया भाषा भी रहेगी। आधिकारिक भाषा अधिनियम में कहीं यह नहीं लिखा है कि असमिया भाषा के अस्तित्व के लिए किसी विशेष प्रतिशत की आवश्यकता है।’

मुख्यमंत्री ने कहा कि असमिया भाषा की शक्ति उसकी सांस्कृतिक विरासत, साहित्यिक परंपरा और जनता की भावनात्मक प्रतिबद्धता में निहित है। इसलिए केवल आंकड़ों के आधार पर भाषा के भविष्य का आकलन करना उचित नहीं होगा।



‘नलबाड़ी व ग्वालपाड़ा से ध्यान भटकाने के लिए उछाला गया आर्य नगर विवाद’

गुवाहाटी। मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा ने आर्य नगर विवाद को लेकर बड़ा राजनीतिक बयान देते हुए दावा किया है कि इस मामले को असामान्य रूप से अधिक प्रचारित किया गया, ताकि राज्य में चर्चा के केंद्र में रहे अन्य दो महत्वपूर्ण घटनाक्रमों ‘नलबाड़ी एनकाउंटर प्रकरण’ और ‘ग्वालपाड़ा टिफिन विवाद’ से लोगों का ध्यान हटाया जा सके।

गत 13 जून को मंत्रिमंडल की बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आर्य नगर की घटना को शुरू में असमिया और बिहारी समुदायों के बीच टकराव के रूप में प्रस्तुत किया गया, लेकिन बाद की जांच में मामला कथित तौर पर उगाही और स्थानीय विवाद से जुड़ा पाया गया। उन्होंने कहा कि इसके बावजूद इस घटना को जिस तरह प्रमुखता दी गई, उसने कई सवाल खड़े किए हैं।

मुख्यमंत्री के अनुसार, जब आर्य नगर प्रकरण सुर्खियों में था, उसी समय नलबाड़ी में हुए चर्चित पुलिस एनकाउंटर और ग्वालपाड़ा में स्कूल टिफिन से जुड़े विवाद को लेकर भी पूरे राज्य में व्यापक बहस चल रही थी।

आर्य नगर की घटना उस समय चर्चा में आई थी जब कथित नशीले पदार्थों के कारोबार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन के दौरान झड़पें हुई थीं।

जनगणना और भाषा पहचान की बहस

असम में लंबे समय से भाषा और पहचान का प्रश्न राजनीतिक तथा सामाजिक विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। आगामी जनगणना को लेकर विभिन्न समुदायों के बीच मातृभाषा दर्ज कराने को लेकर चर्चाएं तेज हो गई हैं। कई संगठनों का मानना है कि जनगणना के आंकड़े भविष्य की भाषाई नीतियों और सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व को प्रभावित कर सकते हैं। हालांकि मुख्यमंत्री ने इस दृष्टिकोण को पूरी तरह स्वीकार नहीं किया। उन्होंने कहा कि यदि कोई समुदाय स्वयं को असमिया के रूप में दर्ज नहीं कराता, तो इससे असमिया भाषा का कोई नुकसान नहीं होगा। असली आवश्यकता यह है कि लोग असमिया भाषा को अपने जीवन, परिवार और संस्कृति का हिस्सा बनाएं।

‘भाषा दिल से जुड़ती है, दबाव से नहीं’

मुख्यमंत्री ने संकेत दिया कि भाषा का संरक्षण किसी प्रशासनिक आदेश या जनगणना प्रक्रिया के माध्यम से नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और सांस्कृतिक आत्मीयता से संभव है। उन्होंने कहा कि जो लोग वास्तव में असम और उसकी संस्कृति को अपनाते हैं, वही असमिया भाषा को मजबूत बनाएंगे।

मुख्यमंत्री का यह बयान असम में भाषा, पहचान और जनगणना को लेकर चल रही बहस को नई दिशा दे सकता है।

बी. बरुवा कैंसर संस्थान में ‘प्योर फॉर क्योर’ सात्विक फूड कियोस्क का शुभारंभ

जन जन विचार

... गुवाहाटी

हरे कृष्ण मूवमेंट, गुवाहाटी की ओर से संचालित ‘प्योर फॉर क्योर: सात्विक फूड कियोस्क’ का गत 18 जून को डॉ. बी. बरुवा कैंसर संस्थान (बीबीसीआई) में विधिवत उद्घाटन किया गया। इस पहल का उद्देश्य अस्पताल में आने वाले रोगियों एवं उनके परिजनों को स्वच्छ, पौष्टिक एवं निःशुल्क सात्विक भोजन उपलब्ध कराना है।

उद्घाटन समारोह में गुवाहाटी सेंट्रल विधानसभा क्षेत्र के विधायक विजय कुमार गुप्ता मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। कार्यक्रम में कियोस्क के दाता कैलाश चंद्र लोहिया, बीबीसीआई के निदेशक डॉ. बीबी बरठाकुर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति, स्वयंसेवक एवं शुभचिंतक मौजूद थे।



इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि रोगियों के उपचार के साथ-साथ पौष्टिक भोजन और मानवीय

सेवा भी अत्यंत आवश्यक है। ‘प्योर फॉर क्योर’ पहल इसी भावना को साकार करने का प्रयास है, जिससे

मरीजों और उनके परिजनों को राहत मिल सकेगी।

कियोस्क की स्थापना में विशेष

सहयोग देने के लिए लोहिया समूह के कैलाश चंद्र लोहिया एवं सुनीता देवी लोहिया के योगदान की सराहना की गई। साथ ही बीबीसीआई प्रशासन और निदेशक डॉ. बीबी बरठाकुर के सहयोग के लिए भी आभार व्यक्त किया गया।

कार्यक्रम के दौरान उन दानदाताओं और स्वयंसेवकों को सम्मानित किया गया, जो वर्षों से इस सेवा कार्य में योगदान देते आ रहे हैं।

हरे कृष्ण मूवमेंट, गुवाहाटी के अध्यक्ष हिज ग्रेस श्री जनार्दन दास ने सभी सहयोगियों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि ‘प्योर फॉर क्योर’ करुणा, सेवा और मानवता की भावना को समर्पित एक महत्वपूर्ण पहल है, जो जरूरतमंद लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य करेगी।

संपादकीय

क्रॉस वोटिंग या विश्वासघात

कर्नाटक विधान परिषद चुनाव में हुई क्रॉस वोटिंग ने एक बार फिर राजनीतिक दलों के भीतर अनुशासन और निष्ठा पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। भाजपा और जेडी(एस) के विधायकों द्वारा कथित रूप से कांग्रेस के पक्ष में मतदान करना केवल चुनावी गणित का मामला नहीं, बल्कि राजनीतिक नैतिकता की भी परीक्षा है।

चुनाव के समय जनता उम्मीदवारों को किसी व्यक्ति विशेष के रूप में नहीं, बल्कि एक विचारधारा और पार्टी के प्रतिनिधि के रूप में चुनती है। ऐसे में यदि विधायक बंद कमरे में अपनी पार्टी के विपरीत मतदान करते हैं, तो यह केवल पार्टी नेतृत्व के साथ नहीं बल्कि उन मतदाताओं के साथ भी विश्वासघात है जिन्होंने उन्हें एक विशेष राजनीतिक एजेंडे के समर्थन में चुना था।

सबसे बड़ा सवाल यह है कि आखिर ऐसी नौबत आती क्यों है? क्या दलों के भीतर संवाद की कमी है, नेतृत्व पर भरोसा घट रहा है या फिर सत्ता और स्वार्थ की राजनीति ने वैचारिक प्रतिबद्धता को पीछे छोड़ दिया है? यदि विधायकों को अपनी ही पार्टी पर भरोसा नहीं है, तो जनता उनसे क्या उम्मीद करे?

भाजपा नेतृत्व द्वारा जवाब-तलब और कार्रवाई की चेतावनी स्वाभाविक है, लेकिन केवल दोषियों की पहचान कर दंडित कर देना पर्याप्त नहीं होगा। राजनीतिक दलों को आत्ममंथन भी करना होगा कि आखिर उनके अपने प्रतिनिधि ही पार्टी लाइन से भटक क्यों रहे हैं।

लोकतंत्र में मतभेद स्वाभाविक हैं, लेकिन जनादेश की पीठ में छुरा घोंपना नहीं। क्रॉस वोटिंग यदि सिद्धांत के लिए हो तो साहस कहलाती है, लेकिन यदि इसके पीछे सत्ता, सौदेबाजी या व्यक्तिगत लाभ हो, तो इसे लोकतंत्र के साथ छल ही कहा जाएगा।

सुलगता सवाल आपके विचार

सवालियों के घरे में व्यवस्था

बिहार के भोजपुर जिले के शाहपुर थाना क्षेत्र में हुई कथित पुलिस मुठभेड़ अब नए सवालियों के घरे में है। मारे गए भरत भूषण तिवारी की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में शरीर से केवल एक गोली मिलने की पुष्टि होने के बाद पुलिस के दावों और उपलब्ध तथ्यों के बीच अंतर दिखाई देने लगा है।

पुलिस प्रार्थमिकी में कुल 16-17 राउंड फायरिंग का उल्लेख है। दावा किया गया कि आरोपी ने पुलिस टीम पर गोलियां चलाई और जवाबी कार्रवाई में वह मारा गया। लेकिन पोस्टमार्टम रिपोर्ट में केवल एक गोली का जिक्र होने से यह स्वाभाविक है कि पूरे घटनाक्रम की निष्पक्ष जांच की मांग उठे। यह मामला केवल एक व्यक्ति की मौत का नहीं, बल्कि कानून-व्यवस्था और पुलिस व्यवस्था की विश्वसनीयता का भी है। यदि पुलिस की कार्रवाई पूरी तरह नियमों के अनुरूप हुई है तो जांच से यह स्पष्ट हो जाना चाहिए। वहीं यदि कहीं कोई चूक, अतिशयोक्ति या तथ्यों में विसंगति है तो उसे भी सामने लाना आवश्यक है।

लोकतंत्र में न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, बल्कि होता हुआ दिखाई भी देना चाहिए। इसलिए इस मामले की पारदर्शी और स्वतंत्र जांच समय की मांग है। सत्य चाहे जो भी हो, उसे सामने लाना ही कानून के राज और जनता के विश्वास को मजबूत करेगा।

टेलीग्राम पर ठीकरा

जन जन विचार
... अभिनय आकाश

टेलीग्राम कुछ लोगों के लिए सिर्फ एक सिंपल मैसेजिंग एप है। कुछ लोग इससे न्यूज अपडेट लेते हैं। कुछ लोग स्टड ग्रप्स को ज्वाइन कर लेते हैं और कुछ लोगों के लिए टेलीग्राम इंटरनेट का सबसे पावरफुल ब्राडकास्टिंग प्लेटफॉर्म है। लेकिन जून 2026 में टेलीग्राम फिर से हेडलाइंस में आ गया है। री-नीट का पर्चा भी लीक न हो जाए इसलिए सरकार ने हफ्ते भर पहले टेलीग्राम बैन कर दिया है। 21 जून को परीक्षा है और 22 जून तक टेलीग्राम बैन रहेगा। फैसला एनटीए की रिक्वेस्ट पर लिया गया है। इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय ने ये बैन आईटी एक्ट 2000 का धारा 69ए के तहत लगाया है। लेकिन टेलीग्राम बैन करने की वजह क्या है? रूस में बने इस एप के कारण भारत में ऐसा क्या हो रहा है जिससे परीक्षाएं प्रभावित हो रही हैं। पेपर लीक के कई मामलों में ये देखा गया है कि सर्कुलेशन का माध्यम टेलीग्राम बनता है। 2024 का नीट हो या 2026 का दोनों एग्जाम में पेपर लीक के तार टेलीग्राम से जुड़े थे। टेलीग्राम ग्रुप से पेपर के स्क्रीनशॉट्स सर्कुलेट होने की बात सामने आई थी। जिसके बाद कई टेलीग्राम ग्रुप्स को बंद कर दिया गया था। लीक करने वाले टेलीग्राम पर पेपर और पैसे का लेन देन करते हैं। टेलीग्राम पर ये करना उनके लिए थोड़ा मुफीद भी होता है। वजह है इस एप के कई फीचर्स और जो लोग इस एप का इस्तेमाल करते हैं। उन्हें पता होगा कि एप में 2 लाख लोगों तक को जोड़ा जा सकता है। यानी एक सेकेंड में लाखों लाख लोगों तक पहुंचाया जा सकता है। टेलीग्राम में सीक्रेट चैट्स की भी सुविधा है। मैसेज सिर्फ सेंडर और रिसीवर ही पढ़ सकते हैं बीच में उसे हक करके कोई डिक्कोड नहीं पढ़ सकता है। टेलीग्राम में मिनटों में बॉट अकाउंट भी तैयार हो जाता है। दिखने में अकाउंट एकदम मशीनी लगेगा, लेकिन उसे चला कोई इंसान रहा होगा। उसका नाम और नंबर पता लगाना आम लोगों के लिए मुश्किल होता है। ज्यादातर मैसेजिंग एप में आप एक दो दिन पहले का मैसेज एडिट नहीं कर सकते। लेकिन टेलीग्राम में ये भी संभव है। सरकार ने 30 जून तक टेलीग्राम से ये एडिट वाला फीचर बंद करने को कहा है। तो सवाल ये है कि टेलीग्राम में ऐसा क्या है जो बार-बार सरकार और लॉ एनफोर्समेंट एजेंसियों का ध्यान खींच लेता है। क्या समस्या टेलीग्राम है या फिर इंटरनेट एक बड़ा चैलेंज है?

सरकार ने टेलीग्राम क्यों बैन कर दिया?

टेलीग्राम पर कोई व्यक्ति अपनी पहचान छिपाकर ऐसा चैनल बना सकता है, जिसमें असीमित लोग जुड़ सकते हैं। 'पेपर लीकड नीट' जैसे चैनलों पर लाखों लोग थे, जिनकी ट्रैकिंग कठिन थी। टेलीग्राम पर पुराने मैसेज एडिट करने पर भी उसका असली समय नहीं बदलता। परीक्षा खत्म होने के बाद एडमिन अपने पुराने और सामान्य मैसेज को एडिट करके वहां असली प्रश्न पत्र की पीडीएफ डाल देते थे। फिर इसका स्क्रीनशॉट दिखाकर झूठा दावा करते थे कि परीक्षा से पहले लीक हो गया था।

टेलीग्राम पर बिना साइज कम किए 2 जीबी तक की बड़ी फाइलें आसानी से शेयर की जा सकती हैं। इसी वजह से इस पर परीक्षा के पेपर और फिल्में आसानी से लीक की जाती हैं।

क्या टेलीग्राम कार्रवाई नहीं करता है?

कार्रवाई करता है। टेलीग्राम ने 2025 में 4.35 करोड़ से ज्यादा चैनल ब्लॉक किए थे और 2026 में रोजाना हटाए जाने वाले चैनलों की संख्या बढ़ाकर 80,000 से 1,40,000 तक कर दी है, लेकिन यह नाकाफी साबित हुई। टेलीग्राम पर अपराधियों को पहचान छिपाने और लाखों का ग्रुप बनाने



सरकार ने 30 जून तक टेलीग्राम से ये एडिट वाला फीचर बंद करने को कहा है। तो सवाल ये है कि टेलीग्राम में ऐसा क्या है जो बार-बार सरकार और लॉ एनफोर्समेंट एजेंसियों का ध्यान खींच लेता है। क्या समस्या टेलीग्राम है या फिर इंटरनेट एक बड़ा चैलेंज है?

की आजादी मिलने से इस पर अस्थायी प्रतिबंध लगाना पड़ा।

वहीं, वॉट्सएप भारतीय नियमों को मानता है। यहां यूजर को ट्रैक करना आसान है... वॉट्सएप पर मोबाइल नंबर जरूरी, टेलीग्राम पर 'यूजरनेम' से पहचान छिपती है, वॉट्सएप पर चैट डिफॉल्ट एन्क्रिप्टेड और ग्रुप मेंबर्स सीमित (1,024) हैं। टेलीग्राम में असीमित लोग जुड़ सकते हैं, जिससे पेपर जल्दी वायरल होते हैं। वॉट्सएप: भारत में ऑफिस। एआई से निगरानी। टेलीग्राम में इसकी कमी है।

टेलीग्राम सीईओ ने क्यों बताया रिलायंस की साजिश

भारत सरकार के इस फैसले पर टेलीग्राम के फाउंडर और सीईओ पावेल डुरोफ का बयान आया और उन्होंने कहा कि इस एक्शन से करोड़ों भारतीयों का नुकसान होने वाला है। पेपर लीक करने वाले किसी दूसरे प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर लेंगे। टेलीग्राम बैन से कुछ नहीं होगा। 16 जून को पावेल डुरोफ ने सोशल पोस्ट में लिखा कि कुछ लोगों ने एग्जाम का लीक पेपर टेलीग्राम पर शेयर कर दिया था। इसलिए भारत सरकार के आईटी मंत्रालय ने इसे एक हफ्ते के लिए बैन कर दिया है। लेकिन इस फैसले का असर 15 करोड़ से ज्यादा आम टेलीग्राम यूजर्स पर पड़ा। पेपर लीक करने वाले असली लोगों पर नहीं। और, इस बैन से पेपर लीक भी नहीं रुका। लीक किए गए पेपर बस दूसरे एप्स पर शेयर किए जाने लगे। डुरोफ ने लिखा कि अगर आप टेलीग्राम को कुछ दिनों के लिए भी बैन कर रहे हैं। तब भी ये आपकी बहुत बड़ी गलती है। एक और एक्स पोस्ट में उन्होंने लिखा कि भारतीय टेलीकॉम कंपनी रिलायंस भारत के बाहर (यूई जैसे कई देशों में) लाखों लोगों के लिए टेलीग्राम के इस्तेमाल को रोकने की कोशिश कर रही है। इसके लिए बीजीपी हाईजैकिंग नाम की टेक्नोलॉजी का इस्तेमाल हो रहा है। ये काम जानबूझकर किया जा रहा है। क्योंकि कई शिकायतें मिलने के बाद भी रिलायंस ने कोई एक्शन नहीं लिया। ये टेलीग्राम और व्हाट्सएप के बीच कॉम्पिटिशन का हिस्सा हो सकता है। रिलायंस में मेटा की हिस्सेदारी है। इंटरनेशनल इंटरनेट रूटिंग सिस्टम का इस तरह से शोषण करना चिंताजनक है। भारत में टेलीग्राम बैन के पीछे रिलायंस या व्हाट्सएप की भूमिका भी हो सकती है।

'अयोध्या कांड' से शर्मसार हिंदुत्व

जन जन विचार

... अयोध्या

करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के केंद्र श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में चढ़ावे की राशि में कथित गड़बड़ी का मामला अब और गंभीर होता जा रहा है। नकदी के गबन की जांच से शुरू हुई एसआईटी की पड़ताल अब सोने-चांदी, हीरे-जवाहरात और करोड़ों रुपए की जमीन खरीद तक पहुंच गई है। जांच एजेंसियों को मिले शुरुआती संकेतों ने यह आशंका पैदा कर दी है कि यदि आरोप सही साबित होते हैं तो यह देश के सबसे बड़े धार्मिक ट्रस्टों में से एक से जुड़ा सबसे बड़ा वित्तीय घोटाला बन सकता है।

सूत्रों के अनुसार एसआईटी को मंदिर में चढ़ाए गए बहुमूल्य आभूषणों का पूरा और स्पष्ट रिकॉर्ड नहीं मिल पा रहा है। ट्रस्ट के कई जिम्मेदार पदाधिकारियों से लगातार पूछताछ की जा रही है, लेकिन जांच अधिकारियों को रिकॉर्ड में अनेक विसंगतियां मिली हैं। इससे यह सवाल उठने लगा है कि श्रद्धालुओं द्वारा भगवान राम के चरणों में अर्पित किए गए बहुमूल्य जेवरात आखिर कहाँ गए और उनका वास्तविक लेखा-जोखा क्या है।

जांच का दायरा अब केवल चंदे की रकम तक सीमित नहीं रह गया है। श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट



द्वारा वर्ष 2025-26 में खरीदी गई 71 एकड़ भूमि की फाइलें भी एसआईटी के रडार पर हैं। भूमि खरीद की प्रक्रिया, भुगतान के स्रोत, बाजार मूल्य और वास्तविक खरीद मूल्य के बीच अंतर सहित अनेक पहलुओं की जांच की जा रही है।

कुछ सौदों में बाजार मूल्य से कई गुना अधिक भुगतान किए जाने के आरोपों ने मामले को और संवेदनशील बना दिया है।

जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेज से छेड़छाड़ के संकेत मिलने से भी संदेह गहरा गया है। यदि

फुटेज को जानबूझकर हटाया या बदला गया है तो यह केवल वित्तीय अनियमितता का नहीं बल्कि साक्ष्य मिटाने के प्रयास का भी गंभीर मामला बन सकता है।

सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि करोड़ों श्रद्धालुओं के विश्वास से जुड़ी संस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही का स्तर आखिर इतना कमजोर कैसे हुआ? जिन लोगों को रामभक्तों के चढ़ावे की सुरक्षा और प्रबंधन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी, वे आज जांच एजेंसियों के सामने जवाब देने की स्थिति में क्यों नहीं हैं?

राम मंदिर केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि करोड़ों भारतीयों की आस्था, संघर्ष और भावनाओं का प्रतीक है। इसलिए इस मामले की निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध जांच आवश्यक है। दोषी चाहे कितना भी प्रभावशाली क्यों न हो, उसके खिलाफ कठोर कार्रवाई होनी चाहिए। क्योंकि भगवान राम के नाम पर मिले दान में भ्रष्टाचार केवल आर्थिक अपराध नहीं, बल्कि करोड़ों श्रद्धालुओं की आस्था के साथ विश्वासघात भी है।

अब देश की निगाहें एसआईटी की जांच पर टिकी हैं। आने वाले दिनों में यह स्पष्ट होगा कि यह केवल कुछ कर्मचारियों की करतूत थी या फिर इसके तार कहीं अधिक ऊपर तक जुड़े हुए हैं।

सम्मानित हुए पत्रकार
नटवर शर्मा



नाजिरा। अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी कपल क्लब (आईएमसीसी) भारत द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा जन-जागृति भूषण अवार्ड-2026 से असम के शिवसागर जिले के वरिष्ठ पत्रकार नटवर शर्मा को सम्मानित किया गया।

स्वर्गीय मृणाल राठी की स्मृति में प्रदान किया जाने वाला यह प्रतिष्ठित पुरस्कार सड़क सुरक्षा के प्रति जन-जागरूकता फैलाने तथा पत्रकारिता के माध्यम से सड़क दुर्घटनाओं में कमी लाने के प्रयासों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से दिया जाता है।

आईएमसीसी की ओर से आयोजित सम्मान समारोह में शिवसागर जिला इकाई की अध्यक्ष भगवती देवी बिहानी एवं शिव प्रसाद बिहानी ने पत्रकार नटवर शर्मा को प्रशस्ति पत्र, पारंपरिक असमिया फूलाम गामोछा, स्मृति चिह्न तथा पुष्पहार भेंट कर सम्मानित किया।

एरियर बिल भुगतान के बदले रिश्वत लेती शिक्षिका ट्रैप

जन जन विचार

... मनोज मेहरा
सागर, मध्यप्रदेश

सागर में लोकायुक्त पुलिस ने एक बड़ी कार्रवाई करते हुए एमएलबी स्कूल स्थित सांदीपनी विद्यालय में पदस्थ शिक्षिका को रिश्वत लेते हुए रंगे हाथों ट्रैप किया है। लोकायुक्त अधिकारियों के अनुसार फरियादी गेंदाराम अहिरवार, जो एमएलबी स्कूल में उच्च माध्यमिक शिक्षक वर्ग-1 के पद पर पदस्थ हैं, ने शिकायत दर्ज कराई थी कि उनकी परिवीक्षा अवधि के दौरान शासन द्वारा स्वीकृत एरियर राशि के बिल तैयार कर भुगतान कराने के एवज में विद्यालय में पदस्थ गंधाली कदम फ्रांसिस द्वारा 3000 रुपए की रिश्वत की मांग की जा रही थी।

शिकायत मिलने के बाद लोकायुक्त टीम ने मामले का



सत्यापन कराया, जिसमें शिकायत सही पाई गई। इसके बाद योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई करते हुए लोकायुक्त टीम ने ट्रैप की कार्रवाई की। अधिकारियों के मुताबिक शिक्षिका द्वारा 2500 रुपए रिश्वत राशि लेने पर सहमति दी गई थी और इसी राशि को लेते हुए उन्हें रंगे हाथों पकड़ा गया।

लोकायुक्त अधिकारियों ने बताया कि कार्रवाई एमएलबी स्कूल परिसर स्थित सांदीपनी विद्यालय में की गई है।

IND365অসমne

বাবা

নগাঁও, জাগীৰোড, হোজাই

লংকা, কঠিয়াতলি, কামপুৰ

বৰপেটা, নলবাৰী

ব পৰা সংবাদদাতা বিচৰা হৈছে

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी : एक देश, एक विधान के प्रबल समर्थक

23 जून को जिनकी पुण्यतिथि है

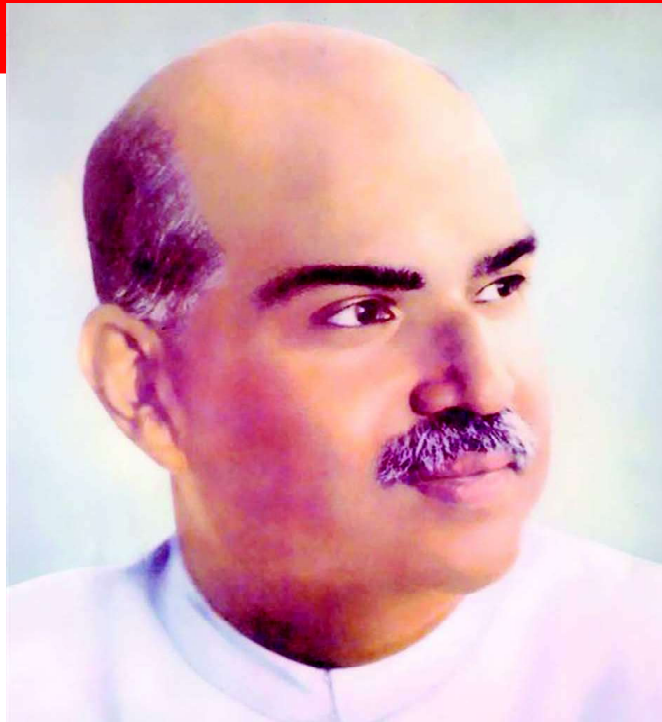
23 जून भारतीय राजनीति के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तिथि है। इसी दिन वर्ष 1953 में प्रखर राष्ट्रवादी नेता, शिक्षाविद और भारतीय जनसंघ के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी का निधन हुआ था। उनका जीवन राष्ट्र की एकता, अखंडता और सांस्कृतिक चेतना के लिए समर्पित रहा।

6 जुलाई 1901 को कोलकाता में जन्मे श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कम आयु में ही शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। मात्र 33 वर्ष की आयु में वे यूनिवर्सिटी ऑफ कलकत्ता के सबसे युवा कुलपति बने। स्वतंत्रता से पूर्व वे बंगाल की

राजनीति में सक्रिय रहे और बाद में स्वतंत्र भारत की पहली केंद्रीय मंत्रिपरिषद में उद्योग एवं आपूर्ति मंत्री बने।

हालांकि, राष्ट्रीय नीतियों के कुछ मुद्दों पर मतभेद के कारण उन्होंने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया। वर्ष 1951 में उन्होंने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, जो आगे चलकर देश की प्रमुख राजनीतिक धारा का आधार बना।

डॉ. मुखर्जी का नाम विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर के प्रश्न पर उनके संघर्ष के लिए याद किया जाता है। उनका प्रसिद्ध नारा था, 'एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेंगे।' वे जम्मू-



कश्मीर को भारत के अन्य राज्यों के समान संवैधानिक व्यवस्था के अंतर्गत लाने के पक्षधर थे।

1953 में जम्मू-कश्मीर में प्रवेश के दौरान उन्हें गिरफ्तार किया गया। हिरासत में रहते हुए 23 जून 1953 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु आज भी चर्चा और शोध का विषय बनी हुई है।

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी केवल एक राजनेता नहीं थे, बल्कि वे राष्ट्रीय एकता, शिक्षा और लोकतांत्रिक मूल्यों के दृढ़ समर्थक थे। उनकी विचारधारा और योगदान भारतीय राजनीति तथा राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में आज भी प्रासंगिक हैं। उनकी पुण्यतिथि हमें राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखने और राष्ट्रीय एकता के प्रति प्रतिबद्ध रहने की प्रेरणा देती है।

एसबीआई में 1500 प्रोबेशनरी ऑफिसर पदों पर भर्ती

देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) ने युवाओं के लिए रोजगार का बड़ा अवसर प्रदान किया है। एसबीआई ने प्रोबेशनरी ऑफिसर (पीओ) के 1500 पदों पर भर्ती के लिए आवेदन प्रक्रिया शुरू कर दी है। बैंकिंग क्षेत्र में काम करने के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवसर माना जा रहा है।

एसबीआई पीओ को देश की सबसे प्रतिष्ठित बैंकिंग नौकरियों में गिना जाता है। आकर्षक वेतन, बेहतर पदोन्नति की संभावनाएं, सामाजिक प्रतिष्ठा और नेतृत्व की भूमिका इस पद को युवाओं के बीच बेहद लोकप्रिय बनाती है। यही कारण है कि हर वर्ष लाखों उम्मीदवार इस परीक्षा में भाग लेते हैं।

भर्ती प्रक्रिया के तहत अभ्यर्थी

18 जून से 8 जुलाई 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। कुल 1500 रिक्तियों में सामान्य वर्ग के लिए 588, ओबीसी के लिए 390, अनुसूचित जाति के लिए 234, अनुसूचित जनजाति के लिए 144 तथा आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 144 पद हैं।

आवेदन के लिए उम्मीदवार का किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक होना आवश्यक है। आयु सीमा 21 से 30 वर्ष निर्धारित की गई है, जबकि आरक्षित वर्गों को नियमानुसार छूट मिलेगी।

चयन प्रक्रिया तीन चरणों में होगी। प्रारंभिक परीक्षा अगस्त में, मुख्य परीक्षा सितंबर में तथा साक्षात्कार एवं अन्य चरण अक्टूबर-नवंबर में आयोजित किए जा सकते हैं। विशेषज्ञों के अनुसार, समयबद्ध

तैयारी, नियमित अभ्यास और बैंकिंग जागरूकता पर विशेष ध्यान देकर उम्मीदवार सफलता प्राप्त कर सकते हैं। बैंकिंग क्षेत्र भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ माना जाता है। ऐसे में एसबीआई जैसी संस्था में अधिकारी बनने का अवसर न केवल एक नौकरी, बल्कि एक सम्मानजनक और सुरक्षित करियर की शुरुआत भी है। युवाओं के लिए यह अवसर अपने सपनों को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हो सकता है। इच्छुक अभ्यर्थियों को सलाह दी जाती है कि वे अंतिम तिथि का इंतजार न करें और समय रहते आवेदन प्रक्रिया पूरी कर अपनी तैयारी को अंतिम रूप दें।

शिक्षक बनने का सुनहरा अवसर यूपी डीएलएड के लिए आवेदन शुरू

करियर

यदि आप भविष्य में प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक बनने का सपना देख रहे हैं, तो आपके लिए अच्छी खबर है। उत्तर प्रदेश में डीएलएड (डिप्लोमा इन एलीमेंट्री एजुकेशन) प्रशिक्षण-2026 के लिए ऑनलाइन आवेदन प्रक्रिया शुरू हो गई है। उत्तर प्रदेश सचिव परीक्षा नियामक प्राधिकारी द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार इच्छुक अभ्यर्थी निर्धारित समय सीमा के भीतर आवेदन कर सकते हैं।

डीएलएड पाठ्यक्रम प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में करियर बनाने वाले युवाओं के लिए एक महत्वपूर्ण प्रशिक्षण कार्यक्रम माना जाता है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से अभ्यर्थियों को शिक्षण कौशल, बाल मनोविज्ञान, कक्षा प्रबंधन और आधुनिक शिक्षण पद्धतियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। यही कारण है कि सरकारी विद्यालयों में शिक्षक बनने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम माना जाता है।

आवेदन प्रक्रिया 18 जून 2026 से प्रारंभ हो चुकी है। अभ्यर्थी 8 जुलाई 2026 तक ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं, जबकि शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 9 जुलाई निर्धारित की गई है। आवेदन पत्र का प्रिंट 11 जुलाई तक लिया जा

सकेगा।

योग्यता की बात करें तो अभ्यर्थी का किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक उत्तीर्ण होना आवश्यक है। आयु सीमा न्यूनतम 18 वर्ष और अधिकतम 35 वर्ष निर्धारित की गई है। आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों को नियमानुसार आयु में छूट प्रदान की जाएगी।

विशेषज्ञों का मानना है कि नई शिक्षा नीति के लागू होने के बाद प्रशिक्षित शिक्षकों की मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में डीएलएड प्रशिक्षण युवाओं के लिए रोजगार के नए अवसर खोल सकता है। जो विद्यार्थी शिक्षा के क्षेत्र में अपना भविष्य बनाना चाहते हैं, उनके लिए यह अवसर अत्यंत महत्वपूर्ण है।

आवेदन प्रक्रिया पूरी तरह ऑनलाइन है। अभ्यर्थी आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर पंजीकरण कर सकते हैं और आवश्यक दस्तावेज अपलोड कर आवेदन पूरा कर सकते हैं। आवेदन करने से पहले पात्रता, आवश्यक दस्तावेज और दिशा-निर्देशों को ध्यानपूर्वक पढ़ना आवश्यक है।

शिक्षा केवल नौकरी का माध्यम नहीं, बल्कि समाज निर्माण का आधार है। ऐसे में शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाले युवाओं के लिए डीएलएड 2026 एक महत्वपूर्ण अवसर साबित हो सकता है।

बाल चित्रकार



नाम : लतिका सिंघी
कक्षा : केजी-1 (एचिवर्स)
स्कूल : माउंट ओलिंपस, गुडगांव



नाम : मुस्कान सिंघी
कक्षा : 4 (ई)
स्कूल : दिल्ली पब्लिक स्कूल, गुडगांव

आईपीएल कैलेंडर : मार्च से मई तक रोमांच

जन जन विचार
...सपोर्ट्स डेस्क

भारतीय क्रिकेट प्रेमियों के लिए एक बड़ी खबर सामने आई है। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) अगले सत्र से इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के कार्यक्रम में बड़ा बदलाव करने की तैयारी कर रहा है। बीसीसीआई सचिव देवाजीत सैकिया के अनुसार, आईपीएल 2027 का आयोजन 10 मार्च से 15 मई के बीच किया जा सकता है। इस बदलाव का मुख्य उद्देश्य खराब मौसम और मानसून के कारण मैचों में होने वाली बाधाओं को कम करना है।

आईपीएल केवल एक क्रिकेट टूर्नामेंट नहीं, बल्कि भारत का सबसे बड़ा खेल महोत्सव बन चुका है। हर वर्ष करोड़ों दर्शक अपने पसंदीदा खिलाड़ियों और टीमों का



उत्साहपूर्वक समर्थन करते हैं। ऐसे में मौसम के कारण मैचों का रद्द होना या प्रभावित होना प्रशंसकों के साथ-साथ आयोजकों के लिए भी चिंता का विषय रहा है। बीसीसीआई का मानना है कि टूर्नामेंट को थोड़ा पहले समाप्त करने से वर्षा और खराब मौसम की आशंकाओं से बचा जा सकेगा।

विशेषज्ञों के अनुसार, नया कार्यक्रम खिलाड़ियों के लिए भी लाभकारी साबित हो सकता है। अत्यधिक गर्मी और मानसून की शुरुआत से पहले प्रतियोगिता पूरी होने से खिलाड़ियों की फिटनेस और प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। साथ ही प्रसारण कंपनियों और प्रायोजकों को भी बेहतर योजना बनाने का अवसर मिलेगा।

पिछला आईपीएल सीजन भी कई मायनों में ऐतिहासिक रहा। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने लगातार

दूसरा खिताब जीतकर नया इतिहास रचा। विराट कोहली की शानदार बल्लेबाजी और टीम के संतुलित प्रदर्शन ने पूरे सत्र में क्रिकेट प्रेमियों का दिल जीता।

यदि नया कार्यक्रम लागू होता है तो यह आईपीएल के इतिहास में एक महत्वपूर्ण बदलाव माना जाएगा। इससे न केवल मैचों की गुणवत्ता बेहतर होगी, बल्कि दर्शकों को भी बिना किसी मौसमीय व्यवधान के पूरे टूर्नामेंट का आनंद लेने का अवसर मिलेगा। क्रिकेट और मनोरंजन के इस महाकुंभ को और अधिक सफल बनाने की दिशा में बीसीसीआई का यह कदम दूरदर्शी निर्णय माना जा रहा है।

आने वाले दिनों में आईपीएल का यह नया कैलेंडर भारतीय क्रिकेट के भविष्य को नई दिशा दे सकता है। अब सभी की नजर बीसीसीआई की अंतिम घोषणा पर टिकी है।

वैभव सूर्यवंशी के साथ विदेश दौरे पर जाएंगे माता-पिता

नई दिल्ली। भारतीय क्रिकेट में उभरते सितारे और महज 15 वर्ष की आयु में राष्ट्रीय टीम में जगह बनाने वाले वैभव सूर्यवंशी को लेकर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने एक विशेष फैसला लिया है। आयरलैंड और इंग्लैंड के

आगामी दौरे पर वैभव के माता-पिता भी उनके साथ जाएंगे। बीसीसीआई सचिव देवाजीत सैकिया ने इस निर्णय के पीछे की वजह बताते हुए कहा कि इतनी कम उम्र में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट के दबाव और वातावरण के बीच खिलाड़ी को भावनात्मक और

पारिवारिक सहयोग मिलना बेहद जरूरी है। वैभव सूर्यवंशी को भारतीय टी-20 टीम में पहली बार शामिल किया गया है। भारतीय टीम आयरलैंड के खिलाफ दो और इंग्लैंड के खिलाफ पांच टी-20 मैच खेलेगी। दौरे की शुरुआत 26

जून को बेलफास्ट में आयरलैंड के खिलाफ पहले मुकाबले से होगी। इस दौरे के लिए चुने गए खिलाड़ियों में वैभव सबसे कम उम्र के खिलाड़ी हैं।

बीसीसीआई सचिव देवाजीत सैकिया ने कहा कि राष्ट्रीय टीम में आमतौर पर 18 वर्ष से कम उम्र के

खिलाड़ी बहुत कम देखने को मिलते हैं। उन्होंने कहा कि कई दशक बाद भारतीय क्रिकेट को वैभव सूर्यवंशी जैसा प्रतिभाशाली खिलाड़ी मिला है। इससे पहले सचिन तेंदुलकर ने मात्र 16 वर्ष की आयु में अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण कर इतिहास रचा था।

पृष्ठ 1 का शेषांश...

अंबुवासी महायोग

सारथी बोरा और मुख्य पुजारी कर्वींद्र शर्मा ने व्यवस्थाओं की विस्तृत जानकारी दी। प्रशासन ने स्पष्ट संदेश दिया कि इस बार श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता होगी तथा किसी भी प्रकार की वीआईपी संस्कृति को बढ़ावा नहीं दिया जाएगा।

लाखों श्रद्धालुओं के ठहराव और विश्राम को ध्यान में रखते हुए प्रशासन ने कामाख्या रेलवे स्टेशन और पांडु पोर्ट के निकट दो बड़े ट्रांजिट कैंप स्थापित करने का निर्णय लिया है। इन शिविरों में भोजन, स्वच्छ पेयजल, चिकित्सा सहायता, विश्राम स्थल, मोबाइल चार्जिंग और सामान रखने की सुविधाएं उपलब्ध रहेंगी। प्रशासन के अनुसार कैंपों से मंदिर तक कोई वाहन सेवा उपलब्ध नहीं होगी। श्रद्धालुओं को निर्धारित नर्सरी मार्ग से पैदल ही मंदिर तक पहुंचना होगा। इसके लिए मार्ग को व्यवस्थित किया गया है और जगह-जगह सहायता केंद्र स्थापित किए गए हैं।

24 घंटे सक्रिय रहेंगे चार कंट्रोल रूम
अंबुवासी मेले के दौरान समन्वय और त्वरित प्रतिक्रिया सुनिश्चित करने के लिए

चार अत्याधुनिक कंट्रोल रूम स्थापित किए जा रहे हैं। ये कंट्रोल रूम कामाख्या पहाड़ी के तल क्षेत्र, नर्सरी पॉइंट, प्रशांति लॉज के निकट वीआईपी पार्किंग क्षेत्र और बंशीबागान में कार्यरत रहेंगे।

इन कंट्रोल रूमों में पुलिस, विद्युत विभाग, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग, लोक निर्माण विभाग तथा प्रशासन के अधिकारी चौबीसों घंटे मौजूद रहेंगे। किसी भी आपात स्थिति, दुर्घटना या भीड़ प्रबंधन की समस्या का समाधान तत्काल किया जाएगा।

गर्मी से राहत के लिए 30 पेयजल केंद्र
गुवाहाटी में बढ़ती गर्मी को देखते हुए इस बार पेयजल व्यवस्था पर विशेष ध्यान दिया गया है। जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग ने पूरे मेला मार्ग पर लगभग 30 स्थानों पर पेयजल केंद्र स्थापित किए हैं। पाइपलाइन के माध्यम से लगातार जलापूर्ति सुनिश्चित की जाएगी ताकि श्रद्धालुओं को किसी प्रकार की परेशानी न हो।

चौबीसों घंटे चिकित्सा सुविधा
श्रद्धालुओं की सहायता के लिए पूरे मार्ग में सात सेवा शिविर स्थापित किए जाएंगे। इन शिविरों में प्रशासनिक अधिकारी, स्वयंसेवक और स्वास्थ्यकर्मी मौजूद रहेंगे। इसके अतिरिक्त एम्बुलेंस, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं

चौबीसों घंटे उपलब्ध रहेंगी।

यातायात पर सख्त नियंत्रण

यातायात पुलिस ने मेले के दौरान विशेष ट्रैफिक प्लान तैयार किया है। आदाबाड़ी बस स्टैंड, बोरीपारा खेल मैदान, माछखोवा और ईदगाह मैदान को पार्किंग स्थल के रूप में विकसित किया गया है।

सुबह 5 बजे से रात 11 बजे तक भारी मालवाहक और धीमी गति वाले वाहनों के प्रवेश पर प्रतिबंध रहेगा। अंतर-जिला बसों के आवागमन पर भी कुछ मार्गों में नियंत्रण रहेगा। पांडु पोर्ट रोड, डीजी रोड, बरबाजार रोड, नीलाचल फ्लाईओवर और एलिवेटेड कॉरिडोर पर सड़क किनारे पार्किंग पूरी तरह प्रतिबंधित रहेगी।

सुरक्षा के लिए हाई-टेक निगरानी

करीब 10 लाख श्रद्धालुओं की संभावित भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था को अभूतपूर्व स्तर पर मजबूत किया गया है। पूरे मेला क्षेत्र में सीसीटीवी कैमरों का जाल बिछाया गया है। संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के लिए विशेष निगरानी दल तैनात किए जाएंगे।

यातायात पुलिस उपायुक्त जयंत सारथी बोरा ने कहा कि सुरक्षा एजेंसियां किसी भी अप्रिय घटना को रोकने के लिए पूरी तरह सतर्क हैं। संदिग्ध व्यक्तियों की गतिविधियों

पर विशेष निगरानी रखी जाएगी।

23 जून से बंद होंगे कपाट

अंबुवासी महायोग के दौरान 23 जून से 25 जून तक मां कामाख्या मंदिर के कपाट बंद रहेंगे। मान्यता है कि इस अवधि में मां कामाख्या वार्षिक रजस्वला काल में रहती हैं। 26 जून की सुबह विशेष पूजा, अनुष्ठान और देवी स्नान के बाद मंदिर के द्वार श्रद्धालुओं के लिए पुनः खोल दिए जाएंगे।

आस्था, तंत्र और संस्कृति का संगम

अंबुवाची महायोग केवल एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि भारतीय तांत्रिक परंपरा, शक्ति साधना और सांस्कृतिक विरासत का जीवंत प्रतीक है। देश-विदेश से हजारों साधु, नागा संन्यासी, तांत्रिक और श्रद्धालु इस अवसर पर कामाख्या पहुंचते हैं। इस वर्ष भी गुवाहाटी में आस्था का महासागर उमड़ने की पूरी संभावना है।

प्रशासन का दावा है कि श्रद्धालुओं की सुरक्षा, सुविधा और सुगम दर्शन सुनिश्चित करने के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अब पूरे देश की निगाहें 26 जून पर टिकी हैं, जब मां कामाख्या के द्वार खुलेंगे और लाखों श्रद्धालु देवी के दर्शन कर पुण्य लाभ प्राप्त करेंगे।

बंटवारा 1947 : बिखरा विभाजन का दर्द

जन जन विचार

...एंटरटेनमेंट डेस्क

साल 2026 की सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक, 'बंटवारा 1947' का ऑफिशियल टीजर आखिरकार रिलीज कर दिया गया है। आमिर खान प्रोडक्शंस के बैनर तले बन रही इस फिल्म के मोशन और कैरेक्टर पोस्टर ने पहले ही सोशल मीडिया पर तहलका मचा रखा था। अब इस नए टीजर ने दर्शकों की उत्सुकता को सातवें आसमान पर पहुंचा दिया है, जिसमें हिम्मत, त्याग और मुश्किल हालात में जिंदा रहने की एक बेहद भावुक कहानी की झलक दिखाई गई है।

भारत की आजादी और 1947 के बंटवारे की पृष्ठभूमि पर बनी 'बंटवारा 1947' का टीजर देश के इतिहास के सबसे दर्दनाक अध्यायों में से एक को फिर से दिखाता है। यह बंटवारे के समय मची अफरा-तफरी, नुकसान और भावनात्मक उथल-पुथल को तो दिखाता ही है, साथ ही उन मुश्किल समय में उभरी हिम्मत और उम्मीद को भी उजागर करता है।

टीजर में दमदार डायलॉग्स और दिल को छू लेने वाला बैकग्राउंड म्यूजिक है, जो इसके भावनात्मक असर को और बढ़ाता है। इसके केंद्र में सनी देओल का किरदार है, जो अकल्पनीय संघर्ष के बीच डर के बजाय हिम्मत और नफ़रत के



फैंस को भाया टीजर, लुटा रहे प्यार

फिल्म के टीजर को फैंस का भरपूर प्यार मिला। लोगों ने ऐसे कमेंट्स किए, 'ओह माय गॉड!!! सनी पाजी + प्रीति जिंटा... क्या टीजर है यार', 'प्रीति जिंटा, मैं बड़े पर्दे पर आपकी वापसी के लिए बहुत उत्साहित हूँ, डिंपल क्वीन', 'टीजर शब्दों से कहीं ज्यादा कहता है। इतिहास, भावनाएं और दमदार परफॉर्मेंस - मैं बहुत उत्साहित

हूँ!', 'आपको इतने दमदार रोल में वापस देखकर बहुत खुशी हुई। आप हर फ्रेम पर छा जाती हैं, क्वीन', 'क्या लाइन है- 'इरादा तो नहीं है, पर ऐतराज भी नहीं है', 'सनी देओल के खाते में एक और ऑल-टाइम ब्लॉकबस्टर, 1000 करोड़ की ओर', और भी बहुत कुछ।

बजाय इंसानियत को चुनता है।

इस फिल्म में शबाना आजमी, सनी देओल, प्रीति जिंटा, करण देओल, अली फजल और अभिमन्यु सिंह जैसे कई कलाकार शामिल हैं। यह फिल्म लगभग तीन दशकों के बाद निर्देशक राजकुमार

संतोषी और सनी देओल की वापसी का भी प्रतीक है।

आमिर खान प्रोडक्शंस की इस फिल्म 'बंटवारा 1947' के डायरेक्टर नेशनल अवार्ड जीतने वाले फिल्ममेकर राजकुमार संतोषी हैं। इसका म्यूजिक एआर रहमान

ने दिया है और गाने के बोल जावेद अख्तर ने लिखे हैं। आमिर खान और अपर्णा पुरोहित द्वारा प्रोड्यूस की गई यह फिल्म 14 अगस्त, 2026 को 'बंटवारा दिवस' के मौके पर दुनिया भर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी।



अगर आप भी पहाड़ों की हसीन वादियों, हरियाली, झरनों और बादलों से घिरे प्राकृतिक दृश्यों का आनंद लेना चाहते हैं, लेकिन बजट आपकी राह में बाधा बनता है, तो कर्नाटक का कूर्ग आपके लिए बेहतरीन विकल्प हो सकता है। अपनी मनमोहक सुंदरता के कारण कूर्ग को 'भारत का स्कॉटलैंड' कहा जाता है।

पश्चिमी घाट की गोद में बसा कूर्ग कॉफी बागानों, घने जंगलों,

पहाड़ियों और झरनों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। खास बात यह है कि यहां मात्र 5 हजार रुपए के बजट में तीन दिन की शानदार यात्रा की जा सकती है।

कैसे पहुंचें: कूर्ग पहुंचने के लिए पहले बेंगलुरु या मैसूर जाना सुविधाजनक रहता है। मैसूर से सरकारी बसों का किराया लगभग 150 से 250 रुपए है, जबकि बेंगलुरु से बसें 300 से 500 रुपए में उपलब्ध हैं।

पहला दिन : झरनों

और सूर्यास्त का आनंद

कूर्ग पहुंचने के बाद किसी बजट होमस्टे या हॉस्टल में ठहर सकते हैं, जहां 500 से 800 रुपए प्रतिदिन में कमरे मिल जाते हैं। पहले दिन अब्बी फॉल्स की प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लें। शाम को राजा सीट से सूर्यास्त का मनोरम दृश्य देखने का अनुभव अविस्मरणीय रहेगा।

दूसरा दिन : हाथियों से

मुलाकात और तिब्बती संस्कृति

दूसरे दिन दुबारे एलीफेंट कैंप में हाथियों के साथ समय बिताने का अवसर मिलता है। इसके बाद कुशलनगर स्थित स्वर्ण मंदिर की यात्रा करें। यहां तिब्बती संस्कृति और आध्यात्मिक वातावरण पर्यटकों को विशेष आकर्षित करता है।

तीसरा दिन : बादलों के बीच रोमांच

अंतिम दिन मंडलपट्टी व्यू पॉइंट जाएं। यहां से दिखाई देने वाले बादलों और पहाड़ियों के दृश्य किसी स्वप्नलोक से कम नहीं लगते। समय हो तो तलाकावेरी भी जा सकते हैं, जिसे कावेरी नदी का उद्गम स्थल माना जाता है।

यादगार सफर, कम खर्च

प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण और कम खर्च में बेहतरीन पर्यटन अनुभव की तलाश करने वालों के लिए कूर्ग एक आदर्श गंतव्य है। यदि आप इस गर्मी में किसी खूबसूरत और बजट फ्रेंडली जगह की तलाश में हैं, तो कूर्ग निश्चित रूप से आपकी सूची में होना चाहिए।

सीता अब लंका खुद जलाएगी

बॉलीवुड में लंबे समय से पुरुष जासूसों और सुपर एजेंटों की कहानियां दर्शकों का मनोरंजन करती रही हैं, लेकिन अब यशराज फिल्म्स अपने स्पाई यूनिवर्स में पहली बार एक महिला जासूस को केंद्र में रखकर नई कहानी लेकर आया है। फिल्म 'अल्फा' का ट्रेलर रिलीज होते ही सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बन गया है।

ट्रेलर की सबसे बड़ी खासियत इसका संवाद है- 'इस बार सीता लंका खुद जलाने आई है।' यह सिर्फ एक संवाद नहीं, बल्कि फिल्म के मूल संदेश की झलक है, जिसमें एक महिला पात्र अन्याय और छल के खिलाफ स्वयं संघर्ष करती नजर आती है।

फिल्म में आलिया भट्ट एक ऐसी युवती की भूमिका निभा रही हैं, जिसे बचपन से ही एक गुप्त मिशन के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। ट्रेलर में सामने आता है कि जिस व्यक्ति को वह अपना पिता समझती है, वही उसके जीवन का सबसे बड़ा रहस्य और चुनौती बन जाता है।

बॉबी देओल फिल्म में 'खलनायक 'फतेह' के किरदार में दिखाई दे रहे हैं। उनका व्यक्तित्व रहस्यमय, खतरनाक और प्रभावशाली नजर आता है। ट्रेलर में उनका संवाद, 'अब इंडिया अल्फा से डरेगा', कहानी में बड़े टकराव का संकेत देता है।

आलिया भट्ट का एक्शन अवतार दर्शकों के लिए नया अनुभव होगा। तेज रफ्तार पीछ, हाथापाई के दृश्य, हाथियारों का इस्तेमाल और भावनात्मक संघर्ष- ट्रेलर में इन सभी का संतुलित मिश्रण दिखाई देता है। वहीं शरवरी वाघ की छोटी-सी झलक भी उत्सुकता बढ़ाती है।

फिल्म का सबसे बड़ा सरप्राइज अंत में मिलता है, जब अभिनेता ऋतिक रोशन की झलक दिखाई देती है। हालांकि उनका किरदार अभी रहस्य बना हुआ है, लेकिन माना जा रहा है कि यह स्पाई यूनिवर्स की आगामी फिल्मों से जुड़ा महत्वपूर्ण कनेक्शन हो सकता है।

विशेषज्ञों का मानना है कि 'अल्फा' केवल एक एक्शन फिल्म नहीं, बल्कि भारतीय सिनेमा में महिला-केंद्रित एक्शन कथाओं को नई दिशा देने का प्रयास भी है। पौराणिक प्रतीकों और आधुनिक जासूसी दुनिया के मिश्रण ने फिल्म को अलग पहचान दी है।

निर्देशक शिव रवेल की यह फिल्म 3 जुलाई को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

‘প্ৰতিখন খেতিলৈ পানী’ৰ লক্ষ্যত অসম

সিঙুৱা জলসিঞ্চন আঁচনি আৰু অইল পাম খেতি সম্প্ৰসাৰণৰ অগ্ৰগতি পৰ্যালোচনা মন্ত্ৰী পীযুষ হাজৰিকাৰ

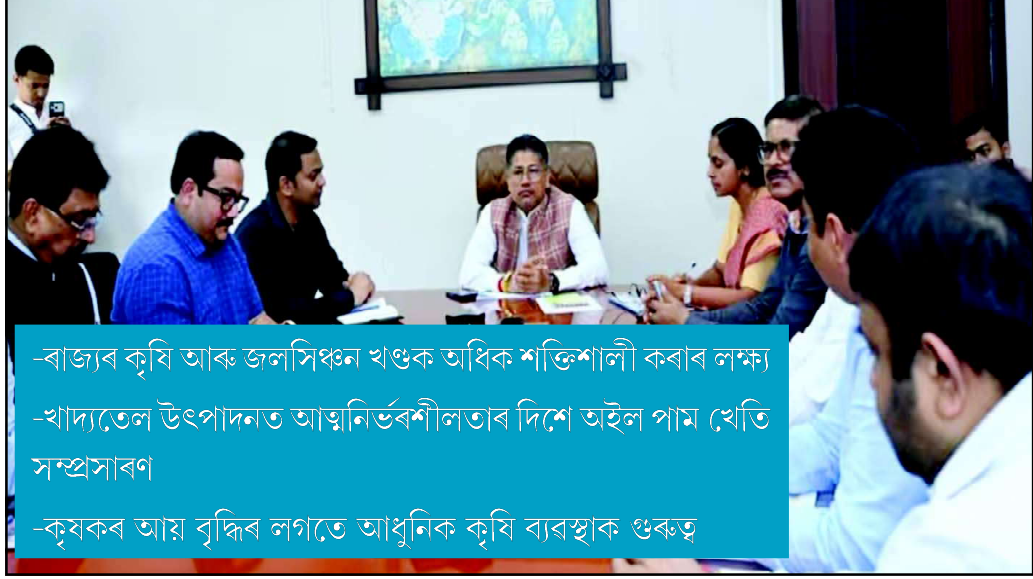
জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

ৰাজ্যৰ কৃষি আৰু জলসিঞ্চন খণ্ডত এক নতুন দিশ উন্মোচনৰ লক্ষ্যৰে অসম চৰকাৰে গ্ৰহণ কৰা কেইবাটাও গুৰুত্বপূৰ্ণ পদক্ষেপৰ অগ্ৰগতি জনতা ভৱনত অনুষ্ঠিত দুটা উচ্চস্তৰীয় বৈঠকত পৰ্যালোচনা কৰা হয়। কৃষি, জলসিঞ্চন আৰু সংসদীয় পৰিক্ৰমা মন্ত্ৰী পীযুষ হাজৰিকাই বৈঠক দুটিত সভাপতিত্ব কৰি সংশ্লিষ্ট বিষয়াসকলক সময়মতে কাম সম্পূৰ্ণ কৰাৰ লগতে গুণগত মান বজাই ৰখাৰ নিৰ্দেশ দিয়ে।

প্ৰথম বৈঠকত ভাৰত চৰকাৰৰ আধুনিক কমাণ্ড এলেকা উন্নয়ন (এমসীএডী) কাৰ্যসূচীৰ অধীনত ৰূপায়ণ হৈ থকা ‘সিঙুৱা ফ্ল’ ইৰিগেচন স্কীম (এফআইএস) ক্লাষ্টাৰ প্ৰকল্পৰ অগ্ৰগতি পৰ্যালোচনা কৰা হয়। এই প্ৰকল্পটোক অসমত পাইলট প্ৰকল্প হিচাপে বাছনি কৰা হৈছে। আধুনিক প্ৰযুক্তি আৰু বৈজ্ঞানিক জল ব্যৱস্থাপনা পদ্ধতিৰ সহায়ত কৃষিভূমিলৈ অধিক দক্ষতাৰে জলসিঞ্চন সুবিধা প্ৰদান কৰাই এই আঁচনিৰ মূল উদ্দেশ্য।

চৰকাৰী তথ্য অনুসৰি, এই প্ৰকল্পৰ জৰিয়তে প্ৰায় ১,৪২৭ হ ১ কৃষিভূমি উপকৃত হ’ব। কৃষকসকলে বছৰৰ বিভিন্ন সময়ত কৃষিকাৰ্য চলাই নিব পৰা হ’ব আৰু উৎপাদন বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা সৃষ্টি হ’ব। মন্ত্ৰী হাজৰিকাই কয় যে, এই প্ৰকল্পৰ সফল ৰূপায়ণে ‘হৰ খেত কো পানী’ৰ লক্ষ্য বাস্তৱায়নত বিশেষ ভূমিকা গ্ৰহণ কৰিব। লগতে



–ৰাজ্যৰ কৃষি আৰু জলসিঞ্চন খণ্ডক অধিক শক্তিশালী কৰাৰ লক্ষ্য
–খাদ্যতেল উৎপাদনত আত্মনিৰ্ভৰশীলতাৰ দিশে অইল পাম খেতি সম্প্ৰসাৰণ
–কৃষকৰ আয় বৃদ্ধিৰ লগতে আধুনিক কৃষি ব্যৱস্থাক গুৰুত্ব

ভৱিষ্যতে ৰাজ্যৰ অন্যান্য অঞ্চলতো এনে আধুনিক জলসিঞ্চন ব্যৱস্থা সম্প্ৰসাৰণৰ পথ মুকলি হ’ব।

বৈঠকত মন্ত্ৰীগৰাকীয়ে প্ৰকল্পৰ কামত কোনো ধৰণৰ গাফিলতি সহ্য কৰা নহ’ব বুলি স্পষ্ট কৰি দিয়ে। নিৰ্ধাৰিত সময়সীমাৰ ভিতৰত উন্নত মানদণ্ড বজাই ৰাখি কাম সম্পূৰ্ণ কৰিবলৈ সংশ্লিষ্ট বিভাগক নিৰ্দেশ দিয়া হয়।

ইয়াৰ পিছতে অনুষ্ঠিত আন এখন গুৰুত্বপূৰ্ণ বৈঠকত ৰাষ্ট্ৰীয় খাদ্যতেল অভিযান-অইল পাম অধীনত অসমত চলি থকা অইল পাম খেতি সম্প্ৰসাৰণৰ বিষয়টো পৰ্যালোচনা কৰা হয়। বৈঠকত খাদ্যতেল উৎপাদনত দেশক আত্মনিৰ্ভৰশীল কৰাৰ লক্ষ্যৰে অইল পাম খেতিৰ ক্ষেত্ৰ বৃদ্ধি কৰাৰ কৌশল আৰু কৃষকসকলক

অধিকভাৱে সংযুক্ত কৰাৰ বিষয় আলোচনা কৰা হয়।

মন্ত্ৰী পীযুষ হাজৰিকাই কয় যে, অসমত অইল পাম খেতিৰ যথেষ্ট সম্ভাৱনা আছে। এই খেতিৰ জৰিয়তে কৃষকসকলৰ আয় উল্লেখযোগ্যভাৱে বৃদ্ধি পাব পাৰে। বৰ্তমান ভাৰতত খাদ্যতেলৰ বৃহৎ অংশ বিদেশৰ পৰা আমদানি কৰিবলগীয়া হয়। সেয়েহে দেশীয় উৎপাদন বৃদ্ধি কৰাৰ বাবে কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে গ্ৰহণ কৰা অভিযানত অসমেও সক্ৰিয় ভূমিকা পালন কৰিব।

তেওঁ লগতে কয় যে, ৰাজ্য চৰকাৰে কৃষকসকলৰ আৰ্থিক স্বাৱলম্বিতা বৃদ্ধি, কৃষি খণ্ডত আধুনিক প্ৰযুক্তিৰ ব্যৱহাৰ আৰু জলসিঞ্চন ব্যৱস্থাৰ উন্নয়নৰ ওপৰত বিশেষ গুৰুত্ব আৰোপ কৰিছে। কৃষি আৰু জলসিঞ্চন বিভাগৰ মাজত সুসম্বন্ধ ৰক্ষা কৰি

উন্নয়নমূলক আঁচনিসমূহৰ ফলপ্ৰসূ ৰূপায়ণ নিশ্চিত কৰা হ’ব।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, জলসিঞ্চন সুবিধাৰ সম্প্ৰসাৰণ আৰু লাভজনক বিকল্প খেতিৰ প্ৰচাৰে অসমৰ কৃষি অৰ্থনীতি অধিক শক্তিশালী কৰি তুলিব। ইয়াৰ ফলত কৃষকৰ উৎপাদন বৃদ্ধি, আয় বৃদ্ধি আৰু গ্ৰাম্য অৰ্থনীতিত নতুন গতি সঞ্চাৰ হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

অসম চৰকাৰৰ এই পদক্ষেপসমূহে ৰাজ্যখনক অধিক উৎপাদনশীল, আধুনিক আৰু আত্মনিৰ্ভৰ কৃষি ব্যৱস্থাৰ দিশে আগবাঢ়াই নিয়াৰ এক শক্তিশালী সংকেত প্ৰদান কৰিছে।

খেতিপথাৰত পানী আৰু কৃষকৰ হাতত লাভজনক বিকল্প খেতি-এই দুয়োটা নিশ্চিত কৰিব পাৰিলেই অসমৰ কৃষি খণ্ডত এক নতুন বিপ্লৱৰ সূচনা হ’ব।

কয়লা খনন সংকট তিনি মাহ সময় বিচাৰিলে মেঘালয় চৰকাৰে

শিলং। মেঘালয়ত কয়লা খননক কেন্দ্ৰ কৰি পুনৰ তীব্ৰ হৈ উঠিছে অসন্তোষ। ৰাজ্যখনৰ কয়লা খনি মালিক, যোগানধৰ্তা আৰু শ্ৰমিকসকলৰ দাবীৰ প্ৰতি সঁহাৰি জনাই উপ-মুখ্যমন্ত্ৰী তথা গৃহমন্ত্ৰী প্ৰেণ্টন টিনছঙে সমস্যাৰ সমাধানৰ বাবে তিনিমাহ সময় বিচাৰিছে। কিন্তু ইয়াৰ মাজতে আন্দোলনকাৰী কয়লা খনি মালিকসকলৰ অনিৰ্দিষ্টকালীন অনশন অব্যাহত আছে।

শিলংত ৰাজ্য চৰকাৰৰ শীৰ্ষ বিষয়াসকল আৰু জয়ন্তীয়া পাহাৰ অঞ্চলৰ কয়লা খনি মালিকসকলৰ মাজত অনুষ্ঠিত বৈঠক কোনো সমাধান অবিহনে সমাপ্ত হয়। মুখ্য সচিব শাকিল আহমেদ আৰু মুখ্য সচিব প্ৰধান ফ্ৰেড্ৰিক ৰয় খাৰকংগৰৰ সৈতে হোৱা আলোচনাৰ পিছত খনি মালিকসকলে চৰকাৰৰ আশ্বাসত সন্তুষ্ট নহোৱাৰ কথা প্ৰকাশ কৰে।

উল্লেখ্য যে, পূব জয়ন্তীয়া পাহাৰ অঞ্চলৰ কয়লা ব্যৱসায়ীসকলে বহুদিন ধৰি কয়লা খননৰ ক্ষেত্ৰত বলবৎ থকা কিছুমান কঠোৰ নিয়ম শিথিল কৰাৰ দাবী জনাই আহিছে। তেওঁলোকৰ মতে, বৰ্তমানৰ আইনী আৰু প্ৰশাসনিক প্ৰক্ৰিয়া সৰু খনি মালিকসকলৰ বাবে অত্যন্ত জটিল আৰু ব্যয়বহুল। এই দাবীক কেন্দ্ৰ কৰি জয়ন্তীয়া কয়লা মালিক, খনি ব্যৱসায়ী, যোগানধৰ্তা আৰু শ্ৰমিক সত্ত্ৰাৰ সভাপতি মাৰ্জাশ্বেল এছ বি বিয়ামৰ নেতৃত্বত ১ জুনৰ পৰা অনিৰ্দিষ্টকালীন অনশন আৰম্ভ হয়।

ভাৰত পেট্ৰলিয়ামৰ টেংকাৰত গোপন চেন্সাৰ! অবৈধ সুৰা সৰবৰাহৰ সন্দেহ



জন জন বিচাৰ

...নাজিৰা

অবৈধ সৰবৰাহ কাৰীয়ে প্ৰতিদিনে নতুন নতুন কৌশল অৱলম্বন কৰি বিভিন্ন সামগ্ৰী সৰবৰাহ কৰাৰ ঘটনা পোহৰলৈ

আহি থকাৰ মাজতে এইবাৰ ভাৰত পেট্ৰলিয়ামৰ এখন তেলবাহী টেংকাৰ ব্যৱহাৰ কৰি নাগালেণ্ডলৈ অবৈধ সুৰা সৰবৰাহৰ সন্দেহজনক ঘটনা পোহৰলৈ আহিছে।

নাজিৰা সমজিলাৰ আৰক্ষী অধীক্ষক তুষাৰ ১৩ পৃষ্ঠাত

শৰণাৰ্থী সমস্যাটো মিজোৰামৰ কাষত কেন্দ্ৰ

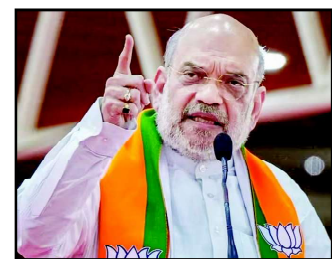
জন জন বিচাৰ

...আইজল

সীমিত সম্পদৰ মাজতো হাজাৰ হাজাৰ শৰণাৰ্থীক আশ্ৰয় আৰু মানৱীয় সহায় আগবঢ়াই অহা মিজোৰামৰ বাবে কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰে উল্লেখযোগ্য সহায়ৰ ঘোষণা কৰিছে। কেন্দ্ৰীয় গৃহমন্ত্ৰী অমিত শ্বাহে ৰাজ্যখনত বাস কৰি থকা শৰণাৰ্থীসকলৰ খাদ্য আৰু ত্ৰাণ ব্যৱস্থাৰ বাবে ১০ কোটি টকা মূল্যৰ চাউল যোগান ধৰাৰ আশ্বাস দিছে।

নতুন দিল্লীত মিজোৰামৰ

১০ কোটি টকাৰ চাউল সাহায্যৰ আশ্বাস অমিত শ্বাহৰ



মুখ্যমন্ত্ৰী লালদুহোমাৰ সৈতে অনুষ্ঠিত বৈঠকত এই আশ্বাস প্ৰদান কৰে গৃহমন্ত্ৰীগৰাকীয়ে। মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে বৈঠকত জনায় যে বৰ্তমান মিজোৰামত মণিপুৰ, বাংলাদেশ আৰু ম্যানমাৰৰ পৰা অহা প্ৰায় ৪০

হাজাৰ শৰণাৰ্থীয়ে আশ্ৰয় লৈ আছে। সীমিত আৰ্থিক আৰু প্ৰশাসনিক সম্পদৰ মাজতো ৰাজ্য চৰকাৰে তেওঁলোকক খাদ্য, বাসস্থান, স্বাস্থ্যসেৱা আৰু অন্যান্য মৌলিক সুবিধা প্ৰদান কৰি আহিছে।

মানৱীয় সংকটৰ কেন্দ্ৰবিন্দুত মিজোৰাম ২০২১ চনত ম্যানমাৰত সামৰিক অভিযান সংঘটিত হোৱাৰ পাছত ৩০ হাজাৰতকৈ অধিক ম্যানমাৰী নাগৰিকে সীমান্ত অতিক্ৰম কৰি ১১ পৃষ্ঠাত

বিদ্যালয়ৰ সমান্তৰাল এক নতুন শিক্ষা ব্যৱস্থা

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

এসময়ত বিদ্যালয়েই আছিল শিক্ষাৰ একমাত্র ভৰসাস্থল। শিক্ষক, পাঠ্যপুথি আৰু বিদ্যালয়ৰ শ্ৰীকক্ষৰ মাজতেই সীমাবদ্ধ আছিল ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ শৈক্ষিক যাত্ৰা। কিন্তু সময় সলনি হৈছে। আজিৰ অসমত, বিশেষকৈ গুৱাহাটী, যোৰহাট, ডিব্ৰুগড়, শিলচৰ বা নাজিৰাৰ দৰে চহৰ-নগৰত, বিদ্যালয়ৰ সমান্তৰালভাৱে গঢ় লৈ উঠিছে এক বৃহৎ “কোচিং অৰ্থনীতি”।

সন্ধিয়া হোৱাৰ লগে লগে গুৱাহাটীৰ জু-ৰোড, বেলতলা, গণেশগুৰি বা মালিগাঁও অঞ্চলত কোচিং চেণ্টাৰৰ সন্মুখত দেখা যায় শতাধিক ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰ ভিৰ। কাকো NEET-ৰ চিকিৎসক হব লাগে, কাকো JEE উত্তীৰ্ণ হৈ IIT-ত যাব লাগে, আনহাতে কোনোবাই CUET বা CLAT-ৰ বাবে দিন-ৰাতি পৰিশ্ৰম কৰি আছে।

এতিয়া প্রশ্ন উঠিছে-কোচিং চেণ্টাৰ কি বিদ্যালয়ৰ বিকল্প হৈ পৰিছে?

গুৱাহাটীৰ এজন ব্যৱসায়ী অভিভাৱক প্ৰদীপ কলিতাই কয়, “বিদ্যালয়ত বহুবিধ লাখ লাখ টকা খৰচ কৰোঁ, কিন্তু সন্তানৰ দুৰ্বল বিষয়বোৰত বিশেষ মনোযোগ পোৱা নাযায়। সেয়ে কোচিংৰ ওপৰত নিৰ্ভৰ কৰিবলগীয়া হৈছে।”

এই মনোভাৱ কেৱল এজন অভিভাৱকৰ নহয়। বহুতে বিশ্বাস কৰে যে বৰ্ধিত প্ৰশাসনিক কাম, সাংস্কৃতিক কাৰ্যসূচী আৰু বিভিন্ন অশৈক্ষিক দায়িত্বৰ বাবে বিদ্যালয়ৰ শিক্ষকসকলে প্ৰতিজন শিক্ষার্থীক পৃথকভাৱে সময় দিব নোৱাৰে। ফলস্বৰূপে, ষষ্ঠ বা সপ্তম শ্ৰেণীৰ পৰাই বহু ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে কোচিং আৰম্ভ কৰে।

অসমতো বৃদ্ধি পাইছে কোচিং সংস্কৃতি। এসময়ত চিকিৎসা আৰু অভিযান্ত্ৰিক শিক্ষাৰ প্ৰস্তুতিৰ বাবে কেৱল কোটা বা দিল্লীৰ নাম শুনা গৈছিল। কিন্তু এতিয়া গুৱাহাটী নিজেই পূৰ্বোত্তৰ ভাৰতৰ এক বৃহৎ কোচিং হাবলৈ পৰিণত হৈছে।

NEET, JEE, CUET, NDA, Banking, SSC, APSC আদিৰ বাবে শতাধিক কোচিং প্ৰতিষ্ঠান গঢ় লৈ উঠিছে। বহু পৰিয়ালে সন্তানৰ শিক্ষাৰ বাবে গুৱাহাটীত ভাড়াঘৰ লৈ বসবাসো আৰম্ভ কৰিছে।

শিৱসাগৰৰ এগৰাকী ছাত্ৰীয়ে কয়, “বিদ্যালয়ত পৰীক্ষাত নম্বৰ পাবলৈ পঢ়োৱা হয়। কিন্তু প্ৰতিযোগিতামূলক পৰীক্ষাৰ বাবে যি ধৰণৰ প্ৰশ্ন সমাধান আৰু কৌশলৰ প্ৰয়োজন, সেয়া কোচিংতহে শিকিবলৈ পাওঁ।” প্ৰবেশিকা পৰীক্ষাই সলনি কৰিলে শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ দিশ।

এতিয়া উচ্চ শিক্ষালয়ত নামভৰ্তিৰ মূল চাবিকাঠি হৈছে বিভিন্ন প্ৰবেশিকা পৰীক্ষা। NEET, JEE, CUET, CLAT,

APSC আদিৰ ফলাফলে শিক্ষার্থীৰ ভৱিষ্যৎ নিৰ্ধাৰণ কৰে।

বিদ্যালয়ৰ পাঠ্যক্ৰম আৰু এই পৰীক্ষাসমূহৰ প্ৰশ্নৰ ধৰণৰ মাজত যথেষ্ট পাৰ্থক্য থকাৰ বাবে ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে একেলগে দুটা শিক্ষা ব্যৱস্থা চলাবলগীয়া হয়-এটা বিদ্যালয়ৰ বাবে, আনটো কোচিংৰ বাবে।

ফলত পুৰাৰ পৰা বিদ্যালয় আৰু সন্ধিয়ালৈ কোচিং-এই হৈ পৰিছে আজিৰ শিক্ষার্থীৰ দৈনন্দিন জীৱন।

কোচিং: সহায়ক নে সামাজিক বৈষম্যৰ নতুন ৰূপ?

শিক্ষাবিদসকলৰ মতে কোচিং চেণ্টাৰে বহু শিক্ষার্থীক সফলতাৰ পথ দেখুৱাইছে যদিও ইয়াৰ এক অন্ধকাৰ দিশো আছে।

দৰিদ্ৰ পৰিয়ালৰ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীয়ে ব্যয়বহুল কোচিংৰ সুবিধা নাপায়। ধনী আৰু মধ্যবিত্ত পৰিয়ালৰ সন্তানসকলে অধিক সুযোগ লাভ কৰে। ফলত শিক্ষাৰ ক্ষেত্ৰতো বৈষম্য বৃদ্ধি পাইছে।

নগাঁওৰ এগৰাকী চৰকাৰী বিদ্যালয়ৰ শিক্ষক ৰঞ্জিত বৰাই কয়, “আজিৰ দিনত কেৱল মেধাই যথেষ্ট নহয়। কোচিংৰ খৰচ বহন কৰিব পৰা ক্ষমতাও এক ডাঙৰ কাৰক হৈ পৰিছে।”

মানসিক চাপৰ নতুন যুগ

কোচিং সংস্কৃতিৰ সৈতে বৃদ্ধি পাইছে মানসিক চাপ। বিদ্যালয়ৰ পৰীক্ষা, মক টেষ্ট, এণ্ট্ৰেন্স এক্সাম, ৰেংকিং-এই সকলোবোৰে বহু শিক্ষার্থীক উদ্বেগ আৰু হতাশাৰ মাজলৈ

ঠেলি দিছে।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, শিক্ষা কেৱল নম্বৰ বা চাকৰিৰ বাবে নহয়; ই এজন ব্যক্তিৰ সামগ্ৰিক বিকাশৰ মাধ্যম হব লাগে।

অসমৰ বাবে পথ কি?

শিক্ষাবিদসকলে কয় যে বিদ্যালয় ব্যৱস্থাক অধিক শক্তিশালী কৰিব লাগিব। শিক্ষক প্ৰশিক্ষণ, আধুনিক শিক্ষণ পদ্ধতি, কেৰিয়াৰ কাউন্সেলিং আৰু মানসম্পন্ন মূল্যায়ন ব্যৱস্থা গঢ়ি তুলিব পাৰিলে কোচিংৰ ওপৰত অতিমাত্ৰাৰ নিৰ্ভৰশীলতা হ্ৰাস পাব।

কোচিং চেণ্টাৰক সম্পূৰ্ণৰূপে দোষাৰোপ কৰিব নোৱাৰি। কাৰণ ই এক বাস্তৱ প্ৰয়োজন পূৰণ কৰিছে। কিন্তু যদি বিদ্যালয়সমূহেই শিক্ষার্থীৰ প্ৰয়োজনীয় সমৰ্থন, দিশ-নিৰ্দেশনা আৰু গুণগত শিক্ষা দিব পাৰে, তেন্তে কোচিং বাধ্যতামূলক নহৈ বিকল্প হৈ থাকিব।

কোচিং চেণ্টাৰৰ উত্থান কেৱল এটা শিক্ষা বিষয়ক ঘটনা নহয়; ই ভাৰতীয় শিক্ষা ব্যৱস্থাৰ গভীৰ সংকটৰ এক প্ৰতিফলন। যেতিয়ালৈকে অভিভাৱকে বিদ্যালয়ৰ ওপৰত পূৰ্ণ আস্থা ঘূৰাই নাপায়, তেতিয়ালৈকে কোচিংৰ ক্লাছৰুমসমূহ ছাত্ৰ-ছাত্ৰীৰে পূৰ্ণ হৈ থাকিব।

প্ৰশ্নটো কোচিং চেণ্টাৰ থাকিব নে নাথাকিব নহয়। প্ৰশ্নটো হল-আমাৰ বিদ্যালয়সমূহ কেতিয়া পুনৰ শিক্ষাৰ মূল কেন্দ্ৰবিন্দু হৈ উঠিব?

মিঞাৰ কবলত থকা কোবাইকটা সত্ৰ শীঘ্ৰেই দখল মুক্ত হব : ধৰ্মকান্ত গগৈ

জন জন বিচাৰ

...যুগান্ত অসীম গগৈ
গুৱাহাটী

অসমত নৱবৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ প্ৰচাৰ আৰু অসমীয়া জাতিৰ প্ৰাণ প্ৰতিষ্ঠাপক মহাপুৰুষ শ্ৰীমন্ত শংকৰদেৱ গুৰুজনাৰ জন্মভূমি শ্ৰীশ্ৰী বটদ্ৰৱা থানৰ নাতিদূৰৈত অৱস্থিত দুৰ্দ্দশাগ্ৰস্ত এখন সত্ৰ হল শ্ৰীশ্ৰী কোৱাইকটা সত্ৰৰ বে-দখলক লৈ অসম প্ৰদেশ বিজেপিৰ মুখপাত্ৰ ধৰ্মকান্ত গগৈয়ে খেদ প্ৰকাশ কৰি কয় যে, গুৰুজনাৰ নাতিবোৱাৰী আই কনকলতাই গুৰুভীঠা বটদ্ৰৱা আৱিষ্কাৰ কৰিবলৈ আহোঁতে বৰ্তমান কোৱাইকটা তেতিয়াৰ নাম আছিল কোব কটা অঞ্চলৰ মাজেৰে অতব্য হাবি-জংঘল কাটি বাট উলিয়াই গৈ ১৬৫৬ খ্ৰীষ্টাব্দত বটদ্ৰৱা আৱিষ্কাৰ কৰিছিল আৰু কোৱাইকটা কৈৱৰ্ত গাঁও গাঁৱৰ নামঘৰৰ গুৰু আসনত বিগ্ৰহ স্থাপন কৰি সত্ৰ পাতি থৈ গৈছিল। তেতিয়াৰে পৰাই কোৱাইকটা

সত্ৰখন স্থানীয় কৈৱৰ্ত গাঁওখনৰ বাইজে অতি আগ্ৰহেৰে, ভক্তিভাৱেৰে প্ৰতিপালন কৰি আহিছে বৰ্তমান পৰ্যন্ত।

ইতিহাস অনুসৰি গুৰুজনাৰ ধৰ্ম দৰ্শনৰ অনুৰাগী বৈষ্ণৱ যুগৰ মহীয়সী নাৰী সতীৰাধিকাৰ জন্ম হৈছিল এই কোৱাইকটাৰ নলচা গাঁৱত।

নগাঁও জিলাৰ অন্যান্য সত্ৰসমূহৰ দৰে এতিয়াও এই দুৰ্দ্দশাগ্ৰস্ত সত্ৰখন বিভিন্ন কাৰণত উন্নয়ন হোৱা নাই যদিও পূৰ্বৰ ঐতিহ্য আৰু পৰম্পৰা মতেই সত্ৰভাগ পৰিচালিত হৈ আহিছে ভূমিপুত্ৰ কৈৱৰ্ত সম্প্ৰদায়ৰ ৰাইজৰ দ্বাৰাই। অসম আন্দোলনৰ সময়ছোৱাত ১৯৮৫ চনৰ

ফেব্ৰুৱাৰী মাহত একাংশ দুষ্কৃতিকাৰী পূৰ্ব বংগদেশীয় মূলৰ মিঞাৰ অত্যাচাৰ-উৎপীড়নৰ বলি হৈ কোৱাইকটা আৰু নলচা গাঁও ত্যাগ কৰিবলৈ বাধ্য হৈছিল ভূমিপুত্ৰ কৈৱৰ্ত সকল।

কিছুবছৰ অনাদৃত-উপেক্ষিত হৈ থকাৰ পিছত তদানীন্তন অগপ চৰকাৰৰ দ্বিতীয়টো আমোলত প্ৰয়াত অসম চৰকাৰৰ মন্ত্ৰী দীগেন বৰাই কোৱাইকটা সত্ৰ পুনৰ উদ্ধাৰ কৰি পুনৰ মণিকূট প্ৰতিষ্ঠাৰে সত্ৰখনক নতুন ৰূপত উজ্জীৱিত কৰাৰ প্ৰয়াস কৰিছিল। গুৰুজনাৰ জন্মস্থান বটদ্ৰৱা থান পৰিচালনা সমিতিৰ সহযোগত স্থানীয় ঘনশ্যাম শইকীয়া নামৰ ব্যক্তিজনাৰ পৰিয়ালটোৱে ১৩ পৃষ্ঠাত

এই সপ্তাহৰ ৰাশিফল

১৯-০৬-২০২৬ ৰ পৰা ২৪-০৬-২০২৬ লৈ

মেঘ : কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ। মানসিক উদ্বিগ্নতা থাকিব পাৰে। চেষ্টাত সফলতা লাভৰ সম্ভাৱনা আছে।

বৃষ : মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। মাতৃৰ শৰীৰ-স্বাস্থ্যৰ ওপৰত মনোযোগ ৰাখিব। ভাগ্যৰ সহায় লাভ কৰিব।

মিথুন : কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ। খৰচ বৃদ্ধিৰ সম্ভাৱনা আছে। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে।

কৰ্কট : মানসিক উদ্বিগ্নতা থাকিব পাৰে। আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত কিছু বাধাৰ সম্ভাৱনা আছে। বিদ্যাৰ্থীৰ বাবে শুভ।

সিংহ : আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ। মানসিক চিন্তাই মন উদ্বিগ্ন কৰি ৰাখিব পাৰে। শৰীৰ-স্বাস্থ্যৰ ওপৰত নজৰ ৰাখিব।

কন্যা : ধৰ্মীয় কাৰ্যৰ পৰা মানসিক সুখ বৃদ্ধি পাব। কৰ্মক্ষেত্ৰত অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। আৰ্থিক দিশত শুভ।

তুলা : কৰ্মক্ষেত্ৰত সুস্থিৰতা থাকিব। সন্তানৰ প্ৰতি মনোযোগ ৰখাৰ প্ৰয়োজন আছে। প্ৰেমৰ ক্ষেত্ৰত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে।

বৃশ্চিক : মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। বিদ্যাৰ্থীয়ে নিয়মানুবৰ্তিতা অবলম্বন কৰক। শাৰীৰিক ক্ষেত্ৰত শুভ।

ধনু : আৰ্থিক ক্ষেত্ৰত শুভ। মানসিক উদ্বিগ্নতা থাকিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত কিছু অস্থিৰতা দেখা দিব পাৰে।

মকৰ : মানসিক সুখ-শান্তি বৃদ্ধি পাব। কৰ্মক্ষেত্ৰত সাৱধানতা অৱলম্বন কৰিব। বিদ্যাৰ ক্ষেত্ৰত শুভ।

কুম্ভ : পতি-পত্নীৰ মাজত মনোমালিন্য ঘটিব পাৰে। মানসিক অস্থিৰতা থাকিব পাৰে। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ।

মীন : মানসিক অস্থিৰতা বৃদ্ধি পাব পাৰে। সন্তানৰ প্ৰতি মনোযোগ ৰাখিব। কৰ্মক্ষেত্ৰত শুভ।

- হিতেন শৰ্মা শাস্ত্ৰী

অধ্যাপক, বিশ্ব জ্যোতিষ বিদ্যাপীঠ, অসম শাখা

যোগাযোগ : ৯৮৫৪০২৬৭৭৯

১৮ বছৰৰ উৰধ্বৰ লোকক আৰু আধাৰ কাৰ্ড নিদিব অসম চৰকাৰে

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

ৰাজ্যত অবৈধ অনুপ্ৰৱেশ ৰোধ আৰু নাগৰিক পৰিচয় ব্যৱস্থাক অধিক স্বচ্ছ কৰাৰ লক্ষ্যৰে অসম চৰকাৰে এক গুৰুত্বপূৰ্ণ আৰু কঠোৰ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰিছে। মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মাৰ অধ্যক্ষতাত অনুষ্ঠিত কেবিনেট বৈঠকত সিদ্ধান্ত লোৱা হৈছে যে এতিয়াৰ পৰা ১৮ বছৰৰ উৰধ্বৰ ব্যক্তিক সাধাৰণভাৱে আধাৰ কাৰ্ড জাৰি কৰা নহ'ব।

কেবিনেট বৈঠকৰ পিছত সংবাদমেলত মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে কয় যে ৰাজ্যৰ কেইবাখনো জিলাত আধাৰ কাৰ্ড বিতৰণৰ হাৰ শতকৰা ১০০ অতিক্ৰম কৰিছে। এই পৰিস্থিতিয়ে গভীৰ উদ্বেগৰ সৃষ্টি কৰিছে আৰু ইয়াৰ আঁৰত অবৈধ অনুপ্ৰৱেশকাৰীৰ উপস্থিতিৰ সম্ভাৱনা নাই কৰিব নোৱাৰি। সেইবাবেই আধাৰ প্ৰদান ব্যৱস্থাত অধিক কঠোৰ নিয়ন্ত্ৰণ আৰোপ কৰাৰ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰা হৈছে।

নতুন ব্যৱস্থা অনুসৰি, ১৮ বছৰৰ উৰধ্বৰ কোনো ব্যক্তিয়ে আধাৰৰ বাবে আবেদন কৰিলে সংশ্লিষ্ট জিলাৰ উপায়ুক্তই তেওঁৰ নাগৰিকত্ব আৰু যোগ্যতা সম্পৰ্কে



বিস্তৃত অনুসন্ধান চলাব লাগিব। তাৰ পিছত ৰাজ্য চৰকাৰলৈ বিশেষ প্ৰতিবেদন প্ৰেৰণ কৰা হ'ব আৰু চৰকাৰৰ অনুমোদন লাভ কৰাৰ পিছতহে আধাৰ জাৰি কৰাৰ সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰা হ'ব।

অৱশ্যে ১৮ বছৰৰ তলৰ শিশু-কিশোৰৰ ক্ষেত্ৰত বৰ্তমানৰ ব্যৱস্থা অব্যাহত থাকিব। তেওঁলোকে পূৰ্বৰ দৰেই সাধাৰণ পদ্ধতিত আধাৰৰ বাবে আবেদন কৰিব পাৰিব।

চাহ বাগিচাৰ শ্ৰমিক আৰু অনুসূচিত জনজাতি সম্প্ৰদায়ৰ বহু লোক এতিয়াও আধাৰ কাৰ্ডৰ আওতাৰ বাহিৰত থকাৰ কথা বিবেচনা কৰি চৰকাৰে সাময়িকভাৱে এই দুয়োটা শ্ৰণীক ৰেহাই প্ৰদান কৰিছে। কিন্তু মুখ্যমন্ত্ৰীয়ে স্পষ্ট কৰি দিছে যে এই

ৰেহাইও স্থায়ী নহয়। ২০২৭ চনৰ ব এপ্ৰিলৰ পৰা এই সম্প্ৰদায়সমূহৰ প্ৰাপ্তবয়স্ক লোকৰ ক্ষেত্ৰতো একে নিয়ম প্ৰযোজ্য হ'ব।

চৰকাৰৰ মতে, এই পদক্ষেপে অবৈধ অনুপ্ৰৱেশকাৰীক ভাৰতৰ গুৰুত্বপূৰ্ণ পৰিচয় পত্ৰ লাভ কৰাত বাধা দিব আৰু ৰাজ্যৰ জনমিতিক ভাৰসাম্য, নিৰাপত্তা আৰু প্ৰশাসনিক স্বচ্ছতা সুৰক্ষিত কৰাত সহায় কৰিব।

ৰাজনৈতিক মহলত এই সিদ্ধান্তক এক সাহসী আৰু যুগান্তকাৰী পদক্ষেপ হিচাপে গণ্য কৰা হৈছে। অনুপ্ৰৱেশ সমস্যা সমাধানৰ ক্ষেত্ৰত অসম চৰকাৰে গ্ৰহণ কৰা এই নতুন নীতি আগন্তুক সময়ত দেশজুৰি আলোচনাৰ বিষয় হৈ উঠিব বুলি ধাৰণা কৰা হৈছে।

নাজিৰাৰ দুজন যুৱক নিৰুদ্দেশ

নাজিৰা। নাজিৰা নগৰৰ দুজন যুৱক একেদিনাই নিৰুদ্দেশ হোৱাৰ ঘটনাই সমগ্ৰ অঞ্চলজুৰি চাঞ্চল্যৰ সৃষ্টি কৰিছে। যুৱক দুজনৰ কোনো সন্ধান নোপোৱাত পৰিয়ালৰ লোকসকল গভীৰ উদ্বেগ আৰু উৎকণ্ঠাৰ মাজত দিন কটাইছে।

জানিব পৰা মতে, নাজিৰা নগৰৰ ১ নং ৱাৰ্ডৰ নিবাসী অনন্ত দাসৰ পুত্ৰ অঞ্জন জ্যোতি দাস (৩০) আৰু একেটা ৱাৰ্ডৰ সুৰেশ দাসৰ পুত্ৰ বিশ্বজিৎ দাস (৩৪) -এ কৰ্মসূত্ৰে বাংগালুৰলৈ যোৱাৰ উদ্দেশ্যে যোৱা ১২ জুনত শিমলুগুৰি ৰেলৱে জংচনৰ পৰা

ৰেলযোগে যাত্ৰা কৰিছিল। কিন্তু যাত্ৰা আৰম্ভ কৰাৰ পিছৰে পৰা দুয়োজন যুৱকৰ সৈতে পৰিয়ালৰ কোনো ধৰণৰ যোগাযোগ হোৱা নাই। পৰিয়ালৰ সদস্যসকলে জনোৱা অনুসৰি, যাত্ৰাৰ দিনৰে পৰা বৰ্তমানলৈকে দুয়োজন যুৱকৰ কোনো সন্ধান বা খবৰ পোৱা হোৱা নাই। তেওঁলোকৰ মোবাইল ফোনতো যোগাযোগ স্থাপন কৰিব পৰা হোৱা নাই। ফলত পৰিয়ালৰ লোকসকলে বিভিন্ন স্থানত খবৰ লোৱাৰ লগতে সম্ভাৱ্য সকলো মাধ্যমেৰে সন্ধান অব্যাহত ৰাখিছে যদিও এতিয়ালৈকে কোনো সুফল লাভ কৰা নাই।

২২ জুনৰ পৰা কামাখ্যা মন্দিৰত অম্বুবাচী মহাযোগ

জন জন বিচাৰ

...গুৱাহাটী

উত্তৰ পূব ভাৰতৰ সৰ্ববৃহৎ ধৰ্মীয় উৎসৱ হিচাপে পৰিগণিত হৈ অহা মহা অম্বুবাচী যোগলৈ লক্ষাধিক ভক্তৰ সমাগম হোৱাৰ সম্ভাৱনা ব্যক্ত কৰিছে কামাখ্যা মন্দিৰ পৰিচালনাৰ দায়িত্বত থকা কামাখ্যা বৰ দেউৰী সমাজে। উল্লেখ্য, অহা ২২ জুনৰ পৰা মহা অম্বুবাচী যোগ আৰম্ভ হ'ব। তাৰ কেইবাদিনো আগৰে পৰা ভক্ত-দৰ্শনাৰ্থীৰ পদধূলিৰে আলোড়িত হৈ পৰিছে নীলাচল পাহাৰস্থিত বিশ্বৰ অন্যতম শক্তিপীঠ মা কামাখ্যা মন্দিৰ চৌহদ। এই সন্দৰ্ভত কামাখ্যা বৰ দেউৰী সমাজৰ বৰ দলৈ কবীন্দ্ৰ প্ৰসাদ শৰ্মাই কয় যে ২২ জুনৰ নিশা ৯ বাজি ৮ মিনিট ২২ ছেকেণ্ডত অম্বুবাচীৰ প্ৰবৃত্তি ঘটিব। তাৰ পাছতে পূৰ্বৰ পৰম্পৰাগত নিয়ম অনুসৰি পৰৱৰ্তী তিনিদিন অৰ্থাৎ ২৩ জুনৰ পৰা ২৫ জুনলৈ মন্দিৰৰ মূল দ্বাৰ বন্ধ ৰখা হ'ব। অহা ২৬ জুনৰ পুৱা কামাখ্যা মন্দিৰৰ পৰম্পৰা অনুসৰি নিত্য-নৈমিত্তিক পূজা-অৰ্চনাৰ পাছতে ভক্তৰ দৰ্শনৰ বাবে মন্দিৰৰ দুৱাৰ খুলি দিয়া হ'ব। অৱশ্যে বিগত কেইবছৰৰ দৰে এইবাৰো কামাখ্যা দেৱালয় পৰিচালনা সমিতিয়ে ২৬ জুনৰ পৰা ২৮ জুনলৈ মন্দিৰত ভি ভি আই পি দৰ্শনৰ ব্যৱস্থা সম্পূৰ্ণৰূপে বাতিল কৰিছে। বৰ দলৈ শৰ্মাই কয় যে অম্বুবাচীৰ নিবৃত্তিৰ পাছতে লাখ লাখ ভক্ত-দৰ্শনাৰ্থীয়ে দেৱীৰ আশিস গ্ৰহণৰ বাবে ইচ্ছা প্ৰকাশ কৰে। সেইবাবেই সেই তিনিদিন সকলো ধৰণৰ ভি ভি আই পি দৰ্শনৰ ব্যৱস্থা বাতিল কৰা হৈছে। নীলাচল পাহাৰৰ স্থানীয় লোকক লৈ দেৱালয় কৰ্তৃপক্ষই অম্বুবাচী

মহাযোগ সুচাৰুৰূপে পৰিচালনাৰ বাবে এখন সমিতি গঠন কৰিছে। সমিতিখনে ইতিমধ্যে সকলো প্ৰস্তুতি আৰম্ভ কৰিছে। দেৱালয়লৈ যোৱা পথৰ বিভিন্ন স্থানত খোৱাপানীৰ ব্যৱস্থা, ভক্তৰ গতিবিধি নিৰীক্ষণৰ বাবে গুৰুত্বপূৰ্ণ স্থানত চি চি টিভি কেমেৰা সংস্থাপন আদি পদক্ষেপ গ্ৰহণ কৰা হৈছে। অৱশ্যে অম্বুবাচীলৈ অহা সাধু-সন্ন্যাসীৰ-বাদে আন তীৰ্থযাত্ৰীসকলৰ থকা-মেলা অথবা খোৱাৰ ব্যৱস্থা পৰিচালনা সমিতিয়ে লোৱা নাই। কেৱল মন্দিৰ চৌহদত থকা দৰ্শনামী আখাৰাত সাধু-সন্ন্যাসীসকলৰ বাবে থকাৰ ব্যৱস্থা কৰা হৈছে। তেওঁলোকক মন্দিৰ কৰ্তৃপক্ষৰ পৰা খোৱা-লোৱাৰ ব্যৱস্থা লোৱা হ'ব। আন তীৰ্থযাত্ৰীসকলৰ বাবে মালিগাওঁ বৰিপাৰা, মালিগাওঁ, আদাবাৰী, পাণ্ডু আৰু ভৰলুমুখ খেলপথাৰত প্ৰশাসনে থকা-মেলাৰ ব্যৱস্থা কৰিব। যাত্ৰীৰ ক্ৰমবৰ্ধমান ভিৰৰ প্ৰতি লক্ষ্য ৰাখি এইবাৰো কামাখ্যা ধামলৈ নিৰ্দিষ্টসংখ্যক প্ৰয়োজনীয় বিশেষ অনুমতি থকা বাহনৰ বাদে আন বাহনৰ চলাচল অম্বুবাচীৰ কেইদিনত বন্ধ কৰা হ'ব। সকলো দৰ্শনাৰ্থীয়ে খোজ কাঢ়ি মন্দিৰলৈ আহিব লাগিব। অৱশ্যে ভক্তপ্ৰাণ ৰাইজৰ সুবিধাৰ বাবে এইবাৰো দেৱালয় পৰিচালনা সমিতিয়ে কামাখ্যা নাৰ্ছাৰীৰ পৰা মূল মন্দিৰলৈ সমগ্ৰ পথছোৱাত কাপেট পাৰি দিয়াৰ ব্যৱস্থা গ্ৰহণ কৰিব। পদপথত প্ৰয়োজনীয় কাপেট পাৰি দিবলৈ সুদূৰ কেৰলমৰ পৰা কাপেট অনা হৈছে। উল্লেখ্য যে বিগত বৰ্ষত অম্বুবাচীৰ সময়ছোৱাত প্ৰায় জ্বু লাখ ভক্তৰ আগমন কামাখ্যা ধামলৈ হৈছিল।

পৃষ্ঠাৰ ৯ পৰা

শৰণাৰ্থী সমস্যাত মিজোৰামৰ

কাষত কেন্দ্ৰ

মিজোৰামত আশ্ৰয় লৈছে। একেদৰে বাংলাদেশৰ চিটাগংগ হিল ট্ৰেষ্টছ অঞ্চলৰ পৰা অহা প্ৰায় ২,৩৬৫ জন শৰণাৰ্থীয়েও ৰাজ্যখনৰ বিভিন্ন জিলাত বসবাস কৰি আছে।

ইয়াৰ উপৰিও ২০২৩ চনত মণিপুৰত মেইতেই আৰু কুকি-জো সম্প্ৰদায়ৰ মাজত সংঘটিত জাতিগত সংঘাতৰ ফলত বাস্তৱ্য হোৱা হাজাৰ হাজাৰ লোকেও মিজোৰামত আশ্ৰয় বিচাৰিছে। ফলস্বৰূপে, উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলৰ এই সৰু ৰাজ্যখন এতিয়া এক বৃহৎ মানৱীয় সংকটৰ বোজা বহন কৰি আছে।

উন্নয়ন আৰু নিৰাপত্তা বিষয়েও আলোচনা

গৃহমন্ত্ৰীৰ সৈতে হোৱা বৈঠকত মুখ্যমন্ত্ৰী লালদুহোমাই কেৱল শৰণাৰ্থী সমস্যাই নহয়, ৰাজ্যখনৰ উন্নয়ন আৰু সীমান্ত সুৰক্ষাৰ বিষয়সমূহো উত্থাপন কৰে। তেওঁ কয় যে মিজোৰাম বহু বছৰ ধৰি শান্তিপূৰ্ণ ৰাজ্য হিচাপে পৰিচিত হোৱাৰ বাবে 'ছিকিউৰিটি ৰিলেটেড এক্সপেণ্ডিচাৰ' আঁচনিৰ সুবিধা লাভ নকৰে। কিন্তু বৰ্ধিত ড্ৰাগছ বৰবৰাহ, সীমান্ত অপৰাধ আৰু চাইবাৰ অপৰাধৰ প্ৰত্যাহ্বান মোকাবিলা কৰিবলৈ এই সহায় অতি প্ৰয়োজনীয়।

অমিত শ্বাহে মুখ্যমন্ত্ৰীক 'পিএম-ডেভাইন' আঁচনিৰ অধীনত অধিক উন্নয়নমূলক প্ৰকল্পৰ প্ৰস্তাৱ কেন্দ্ৰলৈ প্ৰেৰণ কৰিবলৈ পৰামৰ্শ দিয়ে আৰু এই ক্ষেত্ৰত কেন্দ্ৰীয় চৰকাৰৰ পূৰ্ণ সহযোগিতাৰ আশ্বাস প্ৰদান কৰে।

উত্তৰ-পূৰ্বাঞ্চলত মানৱীয় দায়িত্বৰ উদাহৰণ

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, মিজোৰামে শৰণাৰ্থীসকলৰ ক্ষেত্ৰত যি মানৱীয় ভূমিকা পালন কৰিছে, সেয়া সমগ্ৰ দেশৰ বাবে এক উদাহৰণ। স্থানীয় জনগণ, সামাজিক সংগঠন আৰু ৰাজ্য চৰকাৰৰ সমন্বিত প্ৰচেষ্টাত হাজাৰ হাজাৰ বিপদগ্ৰস্ত লোকক সহায় আগবঢ়োৱা হৈছে।

কেন্দ্ৰীয় সহায়ৰ এই ঘোষণাই মিজোৰামৰ ওপৰত পৰা আৰ্থিক চাপ কিছু পৰিমাণে লাঘৱ কৰাৰ লগতে শৰণাৰ্থীসকলৰ খাদ্য সুৰক্ষা নিশ্চিত কৰাত গুৰুত্বপূৰ্ণ ভূমিকা পালন কৰিব বুলি আশা কৰা হৈছে।

শৰণাৰ্থী সংকট, সীমান্ত সুৰক্ষা আৰু মানৱীয় দায়িত্বৰ মাজত ভাৰসাম্য ৰক্ষা কৰি মিজোৰামে যি প্ৰত্যাহ্বানৰ সন্মুখীন হৈছে, কেন্দ্ৰৰ এই সহায়ে সেই প্ৰচেষ্টাক অধিক শক্তিশালী কৰিব বুলি ৰাজনৈতিক মহলে মত প্ৰকাশ কৰিছে।

সম্পাদকীয়

আস্থাৰ নামত লুণ্ঠন?

অযোধ্যাৰ ৰাম মন্দিৰৰ দান-দক্ষিণা আত্মসাৎৰ অভিযোগৰ তদন্ত চলি থকাৰ মাজতে মথুৰাৰ শ্ৰীকৃষ্ণ জন্মভূমি মন্দিৰতো একেধৰণৰ অভিযোগ উত্থাপিত হোৱাটোৱে সমগ্ৰ দেশকে চিন্তিত কৰি তুলিছে। অভিযোগ সত্য নে মিছা, সেয়া তদন্তৰ বিষয়; কিন্তু এটা কথা স্পষ্ট-যেতিয়া কোটি কোটি ভক্তৰ আস্থা আৰু বিশ্বাসৰ সৈতে জড়িত প্ৰতিষ্ঠানসমূহৰ ওপৰত দুৰ্নীতিৰ অভিযোগ উঠে, তেতিয়া ক্ষতিগ্ৰস্ত হয় কেৱল কোনো ব্যক্তি বা সমিতি নহয়, ক্ষতিগ্ৰস্ত হয় সমগ্ৰ সমাজৰ নৈতিক ভিত্তি।

ভক্তই মন্দিৰত দান কৰে ঈশ্বৰৰ নামত, কোনো ব্যক্তি বা গোটাৰ ব্যক্তিগত বিলাসিতাৰ বাবে নহয়। যদি দানৰ ধন, সোণ-ৰূপ আৰু মূল্যবান সামগ্ৰীৰ

সঠিক হিচাপ নাথাকে, যদি স্বচ্ছতাৰ অভাৱ থাকে, তেন্তে সন্দেহৰ সৃষ্টি হোৱাটো স্বাভাৱিক। মথুৰাৰ অভিযোগকাৰীয়ে কৈছে যে দান গণনাৰ সময়ত চিচিটিভি কেমেৰা বন্ধ কৰি ৰখা হয়। অভিযোগ প্ৰমাণিত নহ'লেও এনে অভিযোগেই প্ৰশাসনক জবাবদিহিতাৰ কাঠগড়াত থিয় কৰাবলৈ যথেষ্ট।

আজিৰ ভাৰতত মন্দিৰ, মছজিদ, গীৰ্জা বা গুৰুদ্বাৰা-সকলো ধৰ্মীয় প্ৰতিষ্ঠানেই জনসাধাৰণৰ বিশ্বাসৰ ওপৰত থিয় হৈ আছে। সেয়েহে এই প্ৰতিষ্ঠানসমূহৰ আয়-ব্যয় সম্পূৰ্ণ স্বচ্ছ আৰু জনসাধাৰণৰ বাবে উপলব্ধ হব লাগিব। দানৰ ধন কত ব্যয় হৈছে, কিমান আহিছে, কিমান জমা আছে-সকলো তথ্য ডিজিটেলভাৱে সংৰক্ষণ আৰু নিয়মীয়াকৈ নিৰীক্ষণ হব লাগে।

অযোধ্যাৰ ঘটনাই ইতিমধ্যে বহু প্ৰশ্ন উত্থাপন কৰিছে। যদি তদন্তে অভিযোগ মিছা বুলি প্ৰমাণ কৰে, তেন্তে সংশ্লিষ্টসকলৰ সুনাম পুনৰ প্ৰতিষ্ঠা হব। কিন্তু যদি

অভিযোগ সত্য হয়, তেন্তে কঠোৰ শাস্তি নিশ্চিত হব লাগিব। একেদৰে মথুৰাৰ অভিযোগসমূহো নিৰপেক্ষ তদন্তৰ জৰিয়তে সত্যাসত্য নিৰূপণ কৰাটো সময়ৰ দাবী।

ধৰ্ম মানুহক নৈতিকতা, সততা আৰু আত্মশুদ্ধিৰ শিক্ষা দিয়ে। কিন্তু যদি ধৰ্মীয় প্ৰতিষ্ঠানসমূহেই দুৰ্নীতিৰ অভিযোগত কলংকিত হয়, তেন্তে সাধাৰণ মানুহৰ বিশ্বাস কত থাকিব? আস্থাৰ ভঁৰালসমূহ যদি সন্দেহৰ কেন্দ্ৰবিন্দু হৈ পৰে, তেন্তে সমাজৰ বাবে ইয়াতকৈ ডাঙৰ বিপদ আন একো হব নোৱাৰে।

সেয়েহে এই মুহূৰ্তত প্ৰয়োজন ৰাজনীতি নহয়, সত্যৰ সন্ধান। প্ৰয়োজন শ্লোগান নহয়, স্বচ্ছতা। আৰু প্ৰয়োজন কোনো পক্ষৰ সুৰক্ষা নহয়, জনসাধাৰণৰ আস্থাৰ সুৰক্ষা।

কাৰণ মন্দিৰৰ দান কেৱল ধন নহয়-সেয়া কোটি কোটি মানুহৰ বিশ্বাসৰ সমাহাৰ।

পৰিৱৰ্তিত বিশ্ব ব্যৱস্থাত ভাৰতৰ উত্থানৰ নতুন সংকেত

জন জন বিচাৰ

...কমলেশ

যেতিয়া বিশ্বৰ দুটা বৃহৎ গণতান্ত্ৰিক দেশ ভাৰত আৰু আমেৰিকাৰ শীৰ্ষ নেতাই একেলগে বহে, তেতিয়া সেই সাক্ষাৎ কেৱল সৌজন্যমূলক অনুষ্ঠান হৈ নাথাকে। ফলস্বৰূপে ভাৰতৰ প্ৰধানমন্ত্ৰী নৰেন্দ্ৰ মোদী আৰু আমেৰিকাৰ ৰাষ্ট্ৰপতি ডনাল্ড ট্ৰাম্পৰ সাম্প্ৰতিক বৈঠকেও বিশ্ব ৰাজনীতি আৰু কূটনীতিত এক নতুন বাৰ্তা কঢ়িয়াই আনিছে। এই বৈঠকক বহু বিশ্লেষকে ভাৰত-আমেৰিকা সম্পৰ্কৰ এক নতুন অধ্যায়ৰ সূচনা বুলি অভিহিত কৰিছে।

এসময়ত 'হাউডি মোদী' আৰু 'নমস্তে ট্ৰাম্প'ৰ দৰে অনুষ্ঠানৰ জৰিয়তে দুয়োগৰাকী নেতাৰ ব্যক্তিগত সম্পৰ্ক বিশ্বজুৰি চৰ্চাৰ বিষয় হৈছিল। যদিও পিছৰ সময়ছোৱাত বাণিজ্য, ভিছা নীতি, ৰাছিয়াৰ সৈতে ভাৰতৰ সম্পৰ্ক আৰু আমেৰিকাৰ অভ্যন্তৰীণ ৰাজনৈতিক পৰিৱেশৰ বাবে এই উষ্মতা কিছু হ্ৰাস পোৱা যেন দেখা গৈছিল, তথাপিও ফলস্বৰূপে হোৱা সাম্প্ৰতিক বৈঠকে পুনৰ এক ইতিবাচক বাৰ্তা প্ৰেৰণ কৰিছে। ই স্পষ্ট কৰিছে যে কৌশলগত স্বার্থৰ ক্ষেত্ৰত ভাৰত আৰু আমেৰিকা এতিয়াও একে পথৰ যাত্ৰী।

বিশ্বৰ ৰাজনৈতিক পৰিৱেশ দ্ৰুতগতিত সলনি হৈছে। চীনৰ বৃদ্ধি পোৱা সামৰিক আৰু অৰ্থনৈতিক প্ৰভাৱ, ইণ্ডো-পেচিফিক অঞ্চলত শক্তিৰ প্ৰতিযোগিতা, ৰাছিয়া-ইউক্ৰেইন সংঘাত আৰু পশ্চিম এছিয়াৰ অস্থিৰতাই নতুন নতুন প্ৰত্যাহ্বানৰ সৃষ্টি কৰিছে। এনে পৰিস্থিতিত মোদী-ট্ৰাম্প বৈঠকে ভাৰত-আমেৰিকা কৌশলগত অংশীদাৰিত্বক অধিক শক্তিশালী কৰাৰ স্পষ্ট ইংগিত বহন কৰিছে।

বিশেষকৈ ইণ্ডো-পেচিফিক অঞ্চলত শক্তিৰ ভাৰসাম্য বজাই ৰখাৰ ক্ষেত্ৰত ভাৰত আৰু আমেৰিকাৰ স্বার্থ বহু ক্ষেত্ৰত একে। সামুদ্ৰিক নিৰাপত্তা, অত্যাধুনিক প্ৰযুক্তি, কৃত্ৰিম বুদ্ধিমত্তা, অৰ্থপৰিবাহী চিপ উৎপাদন আৰু প্ৰতিৰক্ষা খণ্ডত সহযোগিতা বৃদ্ধিৰ ক্ষেত্ৰত



বিশ্বৰ ৰাজনৈতিক পৰিৱেশ দ্ৰুতগতিত সলনি হৈছে। চীনৰ বৃদ্ধি পোৱা সামৰিক আৰু অৰ্থনৈতিক প্ৰভাৱ, ইণ্ডো-পেচিফিক অঞ্চলত শক্তিৰ প্ৰতিযোগিতা, ৰাছিয়া-ইউক্ৰেইন সংঘাত আৰু পশ্চিম এছিয়াৰ অস্থিৰতাই নতুন নতুন প্ৰত্যাহ্বানৰ সৃষ্টি কৰিছে। এনে পৰিস্থিতিত মোদী-ট্ৰাম্প বৈঠকে ভাৰত-আমেৰিকা কৌশলগত অংশীদাৰিত্বক অধিক শক্তিশালী কৰাৰ স্পষ্ট ইংগিত বহন কৰিছে।

দুয়োখন দেশ আগবাঢ়ি আহিছে। বিশ্বব্যাপী যোগান শৃংখলাৰ ক্ষেত্ৰতো চীনৰ ওপৰত নিৰ্ভৰশীলতা হ্ৰাস কৰাৰ বিকল্প হিচাপে ভাৰতক অধিক গুৰুত্ব দিয়া হৈছে।

এই বৈঠকৰ আন এক গুৰুত্বপূৰ্ণ দিশ হৈছে চীনলৈ প্ৰেৰণ কৰা কূটনৈতিক বাৰ্তা। দক্ষিণ চীন সাগৰ আৰু ভাৰত মহাসাগৰ অঞ্চলত চীনৰ ক্ৰমবৰ্ধমান উপস্থিতি বিশ্ব শক্তিসমূহৰ বাবে চিন্তাৰ বিষয় হৈ পৰিছে। ভাৰত-আমেৰিকা ঘনিষ্ঠতাই বেইজিংক এই সংকেত দিয়ে যে এছিয়াৰ শক্তি-সন্তুলন বজাই ৰখাৰ বাবে এক বিকল্প মিত্ৰতা গঢ় লৈ

উঠিছে। কোৱাডৰ দৰে মঞ্চসমূহো ইয়াৰ ফলত অধিক সক্ৰিয় হোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে।

একেদৰে ৰাছিয়াৰ বাবেও এই বৈঠক তাৎপৰ্যপূৰ্ণ। ভাৰত আমেৰিকাৰ ঘনিষ্ঠ অংশীদাৰ হ'লেও ৰাছিয়াৰ সৈতে ঐতিহাসিক সম্পৰ্ক বজাই ৰাখিছে। এইটোৱেই ভাৰতৰ বৈদেশিক নীতিৰ অন্যতম বৈশিষ্ট্য-কোনো একক গোটিত আবদ্ধ নাথাকি সকলো শক্তিৰ সৈতে সু-সম্পৰ্ক বজাই ৰখা। বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, এই বহুমুখী কূটনীতিয়ে ভাৰতক বিশ্ব ৰাজনীতিত এক স্বতন্ত্ৰ আৰু বিশ্বাসযোগ্য শক্তি হিচাপে প্ৰতিষ্ঠা কৰিছে।

অৰ্থনীতি আৰু বাণিজ্যৰ ক্ষেত্ৰতো এই বৈঠকৰ সুদূৰপ্ৰসাৰী প্ৰভাৱ থাকিব পাৰে। তথ্য-প্ৰযুক্তি, প্ৰতিৰক্ষা উৎপাদন, নবীকৰণযোগ্য শক্তি, মহাকাশ গৱেষণা আৰু উচ্চপ্ৰযুক্তি উদ্যোগত আমেৰিকাৰ বিনিয়োগ বৃদ্ধি পোৱাৰ সম্ভাৱনা আছে। ইয়াৰ ফলত ভাৰতৰ অৰ্থনৈতিক বিকাশ আৰু কৰ্মসংস্থাপনৰ নতুন দুৱাৰ মুকলি হব পাৰে।

ফ্ৰান্সৰ উপস্থিতিও এই বৈঠকত বিশেষ গুৰুত্ব বহন কৰে। ভাৰত, আমেৰিকা আৰু ফ্ৰান্সৰ মাজত গঢ় লৈ উঠা সহযোগিতাই ইণ্ডো-পেচিফিক অঞ্চলত এক নতুন কৌশলগত সমীকৰণৰ সৃষ্টি কৰিছে। প্ৰতিৰক্ষা, সামুদ্ৰিক নিৰাপত্তা আৰু উন্নত প্ৰযুক্তিৰ ক্ষেত্ৰত ত্ৰিপাক্ষিক সহযোগিতাৰ নতুন সম্ভাৱনাও উন্মোচিত হৈছে।

পাকিস্তান, চীন আৰু আন কেইবাখনো দেশেও এই বৈঠকৰ ওপৰত নিবিড় দৃষ্টি ৰাখিছে। দক্ষিণ এছিয়াৰ ৰাজনীতিত ভাৰতৰ গুৰুত্ব ক্ৰমাগতভাৱে বৃদ্ধি পাইছে আৰু আমেৰিকাৰ সৈতে ঘনিষ্ঠ সম্পৰ্কই সেই অৱস্থানক অধিক শক্তিশালী কৰিছে। আনহাতে, সৌদি আৰব, সংযুক্ত আৰব আমিৰাতি আদি উপসাগৰীয় দেশসমূহে ভাৰত-আমেৰিকা সমন্বয়ক নতুন অৰ্থনৈতিক আৰু বিনিয়োগৰ সুযোগ হিচাপে দেখিছে।

সৰ্বোপৰি, এই বৈঠকে পুনৰ এবাৰ প্ৰমাণ কৰিলে যে ভাৰত এতিয়া কেৱল দক্ষিণ এছিয়াৰ আঞ্চলিক শক্তি নহয়। বৰং আমেৰিকা, ইউৰোপ, ৰাছিয়া আৰু উন্নয়নশীল বিশ্বৰ মাজত ভাৰসাম্য ৰক্ষা কৰিব পৰা এক গুৰুত্বপূৰ্ণ বিশ্ব শক্তি হিচাপে আত্মপ্ৰকাশ কৰিছে। পৰিৱৰ্তিত বিশ্ব ব্যৱস্থাত ভাৰতৰ কণ্ঠস্বৰ অধিক শক্তিশালী হৈছে আৰু আন্তঃৰাষ্ট্ৰীয় সিদ্ধান্ত গ্ৰহণৰ ক্ষেত্ৰত দেশখনৰ ভূমিকা ক্ৰমাগতভাৱে বৃদ্ধি পাইছে।

ফ্ৰান্সত অনুষ্ঠিত মোদী-ট্ৰাম্প বৈঠকৰ আটাইতকৈ ডাঙৰ কূটনৈতিক বাৰ্তা হৈছে- একবিংশ শতিকাৰ বিশ্ব ৰাজনীতিত ভাৰত এতিয়া কেৱল এজন অংশগ্ৰহণকাৰী নহয়, বৰং বিশ্ব শক্তি-সন্তুলনৰ এক গুৰুত্বপূৰ্ণ নিৰ্ণায়ক শক্তি।

বাংলাদেশত ৮১ ফুটীয়া ৰাম মূৰ্তি নিৰ্মাণক লৈ বিতৰ্ক

দুৰাইত ৰচনা হৈছিল ৰাঁচীৰ
আৰএছএছ কাৰ্যালয়ত
আক্ৰমণৰ ষড়যন্ত্ৰ

জন জন বিচাৰ

...*টাকা* নতুন দিল্লী

বাংলাদেশত নিৰ্মাণাধীন ভগৱান ৰামৰ ৮১ ফুট উচ্চতাৰ এক বৃহৎ মূৰ্তিক কেন্দ্ৰ কৰি নতুনকৈ সৃষ্টি হৈছে বিতৰ্ক। দেশখনৰ গাইবান্ধা জিলাৰ পালাশবাৰী উপজিলাত অৱস্থিত এটা মন্দিৰ চৌহদত চলি থকা এই প্ৰকল্পৰ কাম সম্প্ৰতি স্থগিত ৰখা হৈছে বুলি জানিব পৰা গৈছে। ইয়াৰ পিছতেই বাংলাদেশৰ হিন্দু সমাজ আৰু বিভিন্ন সংগঠনৰ মাজত অসন্তোষ বৃদ্ধি পাইছে।

মন্দিৰ পৰিচালনা সমিতিৰ অভিযোগ অনুসৰি, কিছুমান উগ্ৰপন্থী ধৰ্মীয় গোটে নিৰ্মাণকাৰ্য বন্ধ কৰাৰ বাবে হুমকি প্ৰদান কৰিছিল। সেইপৰিস্থিতিৰ পৰিপ্ৰেক্ষিতত স্থানীয় প্ৰশাসনে নিৰাপত্তাজনিত কাৰণ দেখুৱাই সাময়িকভাৱে কাম বন্ধ ৰাখিবলৈ নিৰ্দেশ দিয়ে। অৱশ্যে এই অভিযোগসমূহৰ ওপৰত চৰকাৰীভাৱে সম্পূৰ্ণ তদন্ত চলি আছে।

উল্লেখ্য যে, প্ৰায় ১৫.৫ কোটি

টকা ব্যয় সাপেক্ষে ৰূপায়ণ হ'বলগীয়া এই প্ৰকল্পত ৮১ ফুট উচ্চতাৰ ভগৱান ৰামৰ মূৰ্তিৰ উপৰিও ৫০ ফুটীয়া শ্ৰীকৃষ্ণ আৰু ৩০ ফুটীয়া মহাদেৱৰ মূৰ্তি নিৰ্মাণৰ পৰিকল্পনা আছে। সমিতিৰ দাবী



অনুসৰি, ইতিমধ্যে প্ৰায় ৮০ শতাংশ নিৰ্মাণকাৰ্য সম্পূৰ্ণ হৈছে।

এই ঘটনাক কেন্দ্ৰ কৰি বাংলাদেশৰ বিভিন্ন স্থানত প্ৰতিবাদ আৰম্ভ হৈছে। টাকাৰ কিছু ছাত্ৰ সংগঠন আৰু হিন্দু সংগঠনে মশাল শোভাযাত্ৰা উলিয়াই দোষীসকলৰ বিৰুদ্ধে ব্যৱস্থা গ্ৰহণৰ দাবী জনাইছে। তেওঁলোকৰ মতে,

সংখ্যালঘু সম্প্ৰদায়ৰ ধৰ্মীয় অধিকাৰ আৰু আস্থাৰ প্ৰতি সন্মান প্ৰদৰ্শন কৰা উচিত।

শ্ৰীশ্ৰী ৰাধা গোবিন্দ মন্দিৰ সমিতিৰ সভাপতি হৰিদাস চন্দ্ৰ দাসে কয় যে, এই মূৰ্তি নিৰ্মাণ



কোনো ৰাজনৈতিক কাৰ্যসূচী নহয়, বৰং সনাতন ধৰ্মৰ অন্যতম পূজনীয় ব্যক্তিত্ব ভগৱান ৰামৰ প্ৰতি শ্ৰদ্ধাঞ্জলি। তেওঁ বাংলাদেশ চৰকাৰক নিৰ্মাণকাৰ্য সম্পূৰ্ণ হোৱাৰ অনুকূল পৰিৱেশ নিশ্চিত কৰিবলৈ আহ্বান জনাইছে।

ইফালে ভাৰততো বিষয়টোৱে প্ৰতিক্ৰিয়াৰ সৃষ্টি কৰিছে। বিভিন্ন

সামাজিক আৰু ধৰ্মীয় সংগঠনে ঘটনাটোৰ ওপৰত উদ্বেগ প্ৰকাশ কৰি বাংলাদেশ চৰকাৰক সংখ্যালঘু হিন্দু সমাজৰ নিৰাপত্তা নিশ্চিত কৰাৰ আহ্বান জনাইছে। কিছুমান বিশিষ্ট ব্যক্তিয়ে দুয়োখন দেশৰ মাজত কূটনৈতিক স্তৰত আলোচনা কৰি সমস্যাৰ সমাধান বিচাৰিবলৈ মত প্ৰকাশ কৰিছে।

বিশেষজ্ঞসকলৰ মতে, বাংলাদেশত সংখ্যালঘু সম্প্ৰদায়ৰ ধৰ্মীয় স্বাধীনতা আৰু অধিকাৰ সুৰক্ষাৰ প্ৰশ্নটো পুনৰ এবাৰ আলোচনাৰ কেন্দ্ৰবিন্দুলৈ আহিছে। দক্ষিণ এছিয়াৰ সামাজিক সম্প্ৰীতি আৰু আঞ্চলিক স্থিতিশীলতাৰ স্বার্থত এই ধৰণৰ বিষয়সমূহ সংবেদনশীলভাৱে সমাধান কৰাটো অতি প্ৰয়োজনীয়।

এতিয়া সকলোৰে দৃষ্টি বাংলাদেশ চৰকাৰৰ পৰৱৰ্তী পদক্ষেপৰ ওপৰত নিবদ্ধ হৈছে। নিৰ্মাণকাৰ্য পুনৰ আৰম্ভ হ'ব নে নহয় আৰু বিতৰ্কৰ সমাধান কেনেদৰে হয়, সেয়াই হ'ব আগন্তুক দিনৰ মুখ্য বিষয়।

ৰাঁচী। ৰাষ্ট্ৰীয় স্বয়ংসেৱক সংঘ (আৰএছএছ)-ৰ কাৰ্যালয়ত পেট্ৰল বোমা নিক্ষেপৰ ঘটনাৰ তদন্তত চাঞ্চল্যকৰ তথ্য পোহৰলৈ আহিছে। আৰক্ষীৰ মতে, এই আক্ৰমণৰ ষড়যন্ত্ৰ দুৰাইত বহি ৰচনা কৰা হৈছিল। মূল অভিযুক্ত আমান আনছাৰীৰ পাকিস্তানৰ গুপ্তচৰ সংস্থা আন্তঃসেৱা গোয়েন্দা সংস্থা (আইএছআই)-ৰ সৈতে সম্পৰ্ক থকাৰ তথ্যও তদন্তত প্ৰকাশ পাইছে।

তদন্তত জানিব পৰা গৈছে যে দুৰাইত অৱস্থিত শাহবাজ আলম ওৰফে ভট্টী আৰু বানা ছহেইনে আমানক আৰএছএছ কাৰ্যালয়ক লক্ষ্য কৰি আক্ৰমণ চলোৱাৰ নিৰ্দেশ দিছিল। অভিযোগ অনুসৰি, এই চক্ৰটোৱে আইএছআই আৰু টি.টি.এইচ. নামৰ এটা সন্ত্ৰাসবাদী সংগঠনৰ সৈতে জড়িত হৈ কাম কৰি আছিল। ঘটনাৰ সময়ত আমানে পেট্ৰল বোমা নিক্ষেপ কৰাৰ বিপৰীতে তেওঁৰ সহযোগী ছাইফ আনছাৰীয়ে সমগ্ৰ ঘটনাটোৰ ভিডিঅ চিত্ৰায়ণ কৰিছিল আৰু সেইদৃশ্য দুবাইলৈ প্ৰেৰণ কৰিছিল। আৰক্ষীয়ে জনোৱা মতে, এই কামৰ বিনিময়ত আমানক বৃহৎ পৰিমাণৰ ধন দিয়াৰ প্ৰতিশ্ৰুতি দিয়া হৈছিল।

পৃষ্ঠাৰ ৯ পৰা

ভাৰত পেট্ৰলিয়ামৰ টেংকাৰত গোপন চেম্বাৰ! অবৈধ সুৰা সৰবৰাহৰ সন্দেহ

দেশাইৰ নেতৃত্বত আৰু হালোৱাটিং আৰক্ষী থানাৰ ভাৰপ্ৰাপ্ত বিষয়া তথা আৰক্ষী দলৰ সহযোগত ১৪ জুনৰ পুৱাতে চলোৱা এক বিশেষ অভিযানত এএস-০৬-এজী-১৮৪৪ নম্বৰৰ ভাৰত পেট্ৰলিয়ামৰ এখন টেংকাৰ জব্দ কৰা হয়। ঘটনাই সমগ্ৰ অঞ্চলটোত ব্যাপক চাঞ্চল্যৰ সৃষ্টি কৰিছে।

আৰক্ষী সূত্ৰে জানিব পৰা মতে, গোপন খবৰৰ ভিত্তিত বাহনখনৰ ওপৰত নজৰ ৰখা হৈছিল। তালাচী চলোৱাৰ সময়ত টেংকাৰখনৰ ভিতৰত এক গোপন চেম্বাৰ সদৃশ ব্যৱস্থা থকাৰ তথ্য পোহৰলৈ আহে। ইয়াৰ পিছতে আৰক্ষীয়ে বাহনখন জব্দ কৰি বিস্তৃত তদন্ত আৰম্ভ কৰে।

উল্লেখযোগ্য যে, কিছুদিন ধৰি অসমৰ পৰা নাগালেণ্ডলৈ অবৈধভাৱে সুৰা সৰবৰাহ হৈ অহাৰ অভিযোগ উত্থাপিত হৈছিল। সেই অভিযোগৰ পৰিপ্ৰেক্ষিততে সীমান্ত অঞ্চলত আৰক্ষীয়ে নজৰদাৰী কঠোৰ কৰাৰ সময়তে এই সন্দেহজনক টেংকাৰখন ধৰা পৰে।

আৰক্ষীয়ে ইতিমধ্যে টেংকাৰখনৰ চালকক আটক কৰি সোধ-পোছ আৰম্ভ কৰিছে। গোপন চেম্বাৰটো সুৰা সৰবৰাহৰ বাবে ব্যৱহাৰ কৰা হৈছিল নেকি, ইয়াৰ সৈতে কোনো বৃহৎ সৰবৰাহকাৰী চক্ৰ জড়িত আছে নেকি আৰু পূৰ্বতেও এই টেংকাৰখনৰ জৰিয়তে অবৈধ সুৰা সৰবৰাহ কৰা হৈছিল নেকি- এই সকলো দিশ সামৰি তদন্ত অব্যাহত আছে।

অসম-নাগালেণ্ড সীমান্তত অবৈধ সৰবৰাহ ৰোধৰ ক্ষেত্ৰত হালোৱাটিং আৰক্ষীৰ এই অভিযানক এক গুৰুত্বপূৰ্ণ সাফল্য হিচাপে গণ্য কৰা হৈছে। নতুন নতুন কৌশল অৱলম্বন কৰি চলা চোৰাং ব্যৱসায়ৰ বিৰুদ্ধে আৰক্ষীৰ এই

তৎপৰতাক স্থানীয় ৰাইজে আদৰণি জনাইছে।

মিএগৰ কবলত থকা কোবাইকটা সত্ৰ শীঘ্ৰেই দখল মুক্ত হ'ব : ধৰ্মকান্ত গগৈ

বহু দুৰ্দশা ভোগ কৰিও সত্ৰৰ অক্ষয় বস্তুগিছ জ্বলাই সত্ৰখন ৰক্ষা কৰিছিল। প্ৰকাশ থাকে যে বিভিন্ন সময়ত চৰকাৰী বা বেচৰকাৰী ব্যক্তি, দল-সংগঠন আহি গৱেষণাধৰ্মী বহু তথ্য সংগ্ৰহ কৰি এই সত্ৰখনৰ পৰা নিয়ে যদিও আজি পৰ্যন্ত কিন্তু সত্ৰখনৰ প্ৰতিষ্ঠা আৰু ইয়াৰ দখল মুক্ত বাবে প্ৰয়াস কৰা পৰিলক্ষিত নহল।

২০২২ চনৰ ১৬ জানুৱাৰীত অসমৰ মাননীয় মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা ডাঙৰীয়া এই সত্ৰলৈ আগমণ ঘটাই সত্ৰৰ ভূমিকেন্দ্ৰিক বিষয় আৰু উন্নয়নৰ সম্পৰ্কত আলোচনা কৰি মণিকূট ভাগ নিৰ্মাণৰ বাবে ২০ লক্ষাধিক টকা অসম চৰকাৰৰ তৰফৰ পৰা মুখ্যমন্ত্ৰী গৰাকীয়ে কোবাইকটা সত্ৰলৈ আগবঢ়াই থৈ যায়। এই ধনৰ অপপ্ৰয়োগ আৰু পৰিচালনা সমিতিৰ অদূৰদৰ্শিতাৰ লগতে নগাঁৱৰ সেই সময়ৰ উপায়ুক্ত কাৰ্যালয়ৰ কেইজনমান কৰ্মচাৰীৰ লোভৰ পৰিণতিত আজি পৰ্যন্ত এই ধনৰ বিনিময়ত কোনো নিৰ্মাণ সম্ভৱ হৈ নুঠিল। এই সত্ৰলৈ বহুবাৰ ভ্ৰমণৰ সময়ত নগাঁও উপায়ুক্ত কাৰ্যালয়ত এই সংক্ৰান্তত কেইবাবাৰো অৱগত কৰিছো- কিন্তু সদিচ্ছাৰ অভাৱত চাগে নগাঁও উপায়ুক্ত কাৰ্যালয়ে এই বিষয়ত গুৰুত্ব দিব পৰা নাই।

সচা অৰ্থত হৈছে- এই অঞ্চল সমূহ হৈছে- মিএগৰ বধ্যভূমি। এই কোবাইকটা সত্ৰৰ পৰা আজিও অসমৰ কোনো বৈদ্যুতিক মাধ্যমে এটা লাইভ অনুষ্ঠান কৰিবলৈ সাহস নকৰে?

সত্ৰখন বৰ্তমান চোৱাচিতা কৰি থকা নামঘৰীয়া গৰাকী হৈছে- শ্ৰী দীপক দাস ডাঙৰীয়া। প্ৰায় ৫৭ বছৰ অতিক্ৰম কৰা দীপক দাসে বৈষ্ণৱ ধৰ্মৰ অচলা ভক্তিত শৰণ লৈ নিজৰ প্ৰাণকো তুচ্ছজ্ঞান কৰি এটা কাৰাগাৰ সদৃশ পৰিৱেশত সত্ৰৰ

প্ৰদীপ গছি জ্বলাই ৰাখিছে। নামঘৰীয়াই ডাঙৰকৈ ঘোষা এফাকিও কিজানি গাব নোৱাৰে- কিয়নো গাতে লাগি থকা মিএগই দিগদাৰ পাব। আমি নামঘৰীয়া দীপকৰ বাবে উদাসীন ভকতে লাভ কৰা ক্ষুদ্ৰ জলপানি ভাগো পোৱাৰ ব্যৱস্থা কৰি দিব পৰা নাই। নগাঁও জিলা প্ৰশাসনক বহুবাৰ অনুৰোধ কৰাৰ পাছতো- এই কামতো হৈ উঠা নাই। অৱশ্যে নামঘৰীয়া দীপক দাসক আমি নিজা উদ্যোগত কিছু আৰ্থিক সহযোগিতা নিয়মীয়াকৈ কৰি আহিছো। মাজতে বটদ্ৰৱাৰ সত্ৰৰ সৈতে যান্ত্ৰিক কিছু বিজুতিৰ বাবে- তেল-ধূপ নেবেদ্যৰ লাভৰ ক্ষেত্ৰত কিছু অন্তৰায় দেখা দিছিল-সেয়াও বিগত সময়ত আমি বটদ্ৰৱা সত্ৰৰ পৰিয়ালৰ সৈতে আলোচনা কৰি বিশেষ কৈ শ্ৰী নিপুৰমণি দেৱ শৰ্মাৰ জৰিয়তে সমাধান কৰি দিয়া হৈছে।

বৰ্তমানৰ সত্ৰৰ পৰিচালনা সমিতিৰ সৈতে আমি কেইবাবাৰো আলোচনাত মিলিত হৈছো- সত্ৰখনৰ ভৱিষ্যতৰ বিকাশ আৰু পুনৰ নিৰ্মাণৰ বিষয়টো নগাঁও জিলা প্ৰশাসন আৰু সহানীয়া বিধায়ক মাননীয় ৰূপক শৰ্মা ডাঙৰীয়াই গুৰুত্ব আৰোপ কৰিলে নিশ্চিত ভাৱে বৈষ্ণৱপ্ৰিয় ৰাইজ উপকৃত হ'ব।

অৱশ্যে এই কোবাইকটা সত্ৰৰ দুৰ্দশাৰ কথা বহুৰ-বহুৰ ধৰি চলি অহাৰ পাছত একমাত্ৰ মুখ্যমন্ত্ৰী ডঃ হিমন্ত বিশ্ব শৰ্মা ডাঙৰীয়াইহে চৰজমিন তদন্ত কৰি ইয়াত উপস্থিত হৈছিল।

বৈষ্ণৱ প্ৰিয়, শান্তিপ্ৰিয়, ভ্ৰাতৃত্ববোধৰ কথা কোৱা আমাৰ অসমীয়াৰ দুৰ্বল মানসিকতাৰ বাবেই আমি সংস্কৃতিলৈ বাৰে-বাৰে প্ৰত্যাহ্বান নামি আহিছে। মুখ্যমন্ত্ৰী গৰাকীয়ে ২০ লক্ষাধিক ধন আৱণ্টন দিয়াৰ পাছতো - এচপৰাও ইটা নপৰাকৈ ২০ লক্ষাধিক টকা উদৰস্থ কৰিব বিচৰা পৰিচালনা সমিতিৰ কাৰ্যকৰ্তাই কেনেদৰে সতী ৰাধিকা আইৰ শেষ ভেটিকন ৰক্ষা কৰিব?

‘ৰাখ’- পুনৰ সজীৱ হ’ল ভাৰতক কঁপাই তোলা ৰঙা-বিলাহী হত্যাকাণ্ডৰ বিভীষিকা

ডিজিটেল যুগত ক্ৰাইম থ্ৰিলাৰ ধাৰাৰ জনপ্ৰিয়তা দিনক দিনে বৃদ্ধি পাইছে। কিন্তু যেতিয়া কোনো ধাৰাবাহিক কেৱল কাল্পনিক কাহিনী নহয়, বৰং দেশক এক সময়ত স্তম্ভিত কৰি তোলা বাস্তৱ অপৰাধৰ ওপৰত আধাৰিত হয়, তেতিয়া সেই সৃষ্টি দৰ্শকৰ মনত এক বিশেষ কৌতূহল আৰু প্ৰত্যাশাৰ জন্ম দিয়ে। পৰিচালক প্ৰোসিত ৰায়ৰ নতুন ৱেব ছিৰিজ ‘ৰাখ’ এনে এক প্ৰচেষ্টা, যিয়ে ১৯৭৮ চনৰ কুখ্যাত ‘ৰঙা-বিলাহী অপহৰণ আৰু হত্যাকাণ্ড’ক নতুন প্ৰজন্মৰ আগত পুনৰ উপস্থাপন কৰিছে।

ভাৰতৰ অপৰাধ ইতিহাসৰ অন্যতম বিভীষিকাময় ঘটনাসমূহৰ ভিতৰত ৰঙা-বিলাহী কাণ্ড অন্যতম। দুজন নিৰ্দোষ শিশুৰ অপহৰণ আৰু নৃশংস হত্যায়ে সেই সময়ত সমগ্ৰ দেশক কঁপাই তুলিছিল। ‘ৰাখ’ত সেই ঘটনাৰ আধাৰত গঢ় লৈ উঠা কাহিনীয়ে কেৱল অপৰাধৰ তদন্তকেই নহয়, ঘটনাটোৰ মানৱীয় আৰু মানসিক দিশসমূহো স্পৰ্শ কৰিছে।

ধাৰাবাহিকখনৰ আৰম্ভণি হয় এক সাধাৰণ দিনৰ ঘটনাৰে। দুজন



শিশু ঘৰৰ পৰা ওলাই যায়, কিন্তু গন্তব্যস্থানত কেতিয়াও উপস্থিত নহয়। সন্তান দুটাৰ সন্ধান নাপাই পৰিয়ালত হাহাকাৰ পৰিস্থিতিৰ সৃষ্টি হয়। আৰক্ষীৰ ওচৰত সহায় বিচৰা পিতৃ-মাতৃৰ ভূমিকাত অভিনয় কৰা ছোনালী বেদ্ৰে আৰু আমিৰ বশীৰে দৰ্শকক গভীৰভাৱে আৱেগিক কৰি তোলে।

ইয়াৰ পিছত কাহিনীত প্ৰৱেশ কৰে উপ-পৰিদৰ্শক জয়প্ৰকাশ, যাৰ ভূমিকাত আছে অলী ফজল। নিজৰ কেৰিয়াৰৰ প্ৰথমটো ডাঙৰ গোচৰ হাতত লৈ তেওঁ আৰম্ভ কৰে এক জটিল অনুসন্ধান। বহু চেষ্টা আৰু তদন্তৰ অন্তত শিশুদ্বয়ৰ মৃতদেহ

উদ্ধাৰ হয় আৰু তাৰ পিছতে আৰম্ভ হয় দেশৰ দুজন কুখ্যাত অপৰাধী ৰঙা আৰু বিলাহীক বিচাৰি উলিওৱাৰ শিহৰণকাৰী অভিযান।

‘ৰাখ’ৰ আটাইতকৈ শক্তিশালী দিশ হৈছে ইয়াৰ সংযমী উপস্থাপন। বহু ক্ৰাইম থ্ৰিলাৰে দৰ্শকৰ মনোযোগ আকৰ্ষণৰ বাবে অতিনটকীয়তা বা অতিৰঞ্জনৰ আশ্ৰয় লয়। কিন্তু পৰিচালক প্ৰোসিত ৰায়ে সেই পথ এৰাই চলিছে। তেওঁ ঘটনাবোৰক যিমানখিনি প্ৰয়োজন সিমানখিনিয়েই দেখুৱাইছে। ফলত প্ৰতিটো দৃশ্য অধিক বাস্তৱ, অধিক বেদনাদায়ক আৰু অধিক

বিশ্বাসযোগ্য হৈ উঠিছে।

অলী ফজলে তদন্তকাৰী আৰক্ষী বিষয়াৰ ভূমিকাত অসাধাৰণ অভিনয় আগবঢ়াইছে। তেওঁৰ চৰিত্ৰটো কোনো ‘চুপাৰহিৰো’ আৰক্ষী বিষয়াৰ দৰে নহয়; বৰং এজন সাধাৰণ, সংবেদনশীল আৰু নিজৰ সীমাবদ্ধতাৰ সৈতে যুঁজি থকা তদন্তকাৰীৰ প্ৰতিচ্ছবি। এই স্বাভাৱিকতাই তেওঁৰ অভিনয়ক অধিক শক্তিশালী কৰি তুলিছে।

ছোনালী বেদ্ৰেৰ অভিনয়ো বিশেষভাৱে উল্লেখযোগ্য। সন্তান হেৰুৱাই ভগ্ন হৃদয়ৰ এগৰাকী মাতৃৰ যত্না তেওঁ যিদৰে প্ৰকাশ কৰিছে, সেয়া দৰ্শকৰ মন চুই যায়। আনহাতে, আমিৰ বশীৰ, দিব্যেন্দু ভট্টাচাৰ্য, ৰাকেশ বেদী আৰু দবিন্দৰ গিলে নিজ নিজ চৰিত্ৰত বিশ্বাসযোগ্য অভিনয় আগবঢ়াইছে।

অৱশ্যে ধাৰাবাহিকখনৰ আটাইতকৈ শিহৰণকাৰী অংশ হৈছে ৰঙা আৰু বিলাহীৰ চৰিত্ৰ। আকাশ মাখিজা আৰু ৰমনদীপ যাদৱে এই দুটা চৰিত্ৰক এনেদৰে ৰূপায়ণ কৰিছে যে দৰ্শকে কেৱল অপৰাধীকেই দেখা নাপায়, বৰং

অপৰাধৰ আঁৰত লুকাই থকা এক ভয়ংকৰ মানসিকতাৰ সন্মুখীন হয়।

‘ৰাখ’ৰ বিশেষত্ব এই যে ই কেৱল আৰক্ষীৰ তদন্ত বা অপৰাধ সমাধানৰ কাহিনী নহয়। ই অপৰাধৰ সামাজিক আৰু মানসিক পটভূমিও উন্মোচন কৰে। অপৰাধীসকল কেনেকৈ চিন্তা কৰে, কেনেকৈ সমাজৰ মাজতেই এক ভয়ংকৰ মানসিকতাৰ বিকাশ ঘটে- সেই দিশসমূহো কাহিনীত সুন্দৰভাৱে ফুটাই তোলা হৈছে।

সামগ্ৰিকভাৱে ‘ৰাখ’ এক শক্তিশালী, সংবেদনশীল আৰু চিন্তাশীল ক্ৰাইম থ্ৰিলাৰ। ই দৰ্শকক কেৱল মনোৰঞ্জন নিদিয়; বৰং অপৰাধ, ন্যায় আৰু মানৱীয় বেদনাৰ বিষয়ে নতুনকৈ ভাবিবলৈ বাধ্য কৰে। ধাৰাবাহিকখন শেষ হোৱাৰ পিছতো ইয়াৰ দৃশ্য আৰু প্ৰশ্নসমূহ দৰ্শকৰ মনত বহুদিনলৈ গুৰুজ্বৰিত হৈ থাকে।

আজিৰ থথথ যুগত বহু ক্ৰাইম ছিৰিজ আহে আৰু যায়, কিন্তু ‘ৰাখ’ তেনে সৃষ্টি নহয়। ই এক স্মৰণীয় অভিজ্ঞতা, যিয়ে ভাৰতৰ অপৰাধ ইতিহাসৰ এক অন্ধকাৰ অধ্যায়ক পুনৰ এবাৰ জীৱন্ত কৰি তোলে।

হিমালয়ৰ কোলাত সেউজীয়া সপোন নৈনিতাল

গ্ৰীষ্মকালৰ প্ৰচণ্ড গৰমত যেতিয়া সমতলভূমিৰ জনজীৱন অতিষ্ঠ হৈ উঠে, তেতিয়া পাহাৰৰ শীতল পৰিৱেশে সকলোকে আকৰ্ষণ কৰে। এনে সময়ত উত্তৰাখণ্ডৰ নৈনিতাল পৰ্যটকৰ বাবে এক স্বৰ্গসম গন্তব্যস্থান হিচাপে পৰিগণিত হয়। কুমায়ুন পাহাৰীয়া অঞ্চলত অৱস্থিত এই মনোমোহা চহৰখন প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্য, শীতল বতাহ, নীলাভ হ্ৰদ আৰু সেউজীয়া পাহাৰেৰে সজ্জিত।

জুন মাহত নৈনিতালৰ সৌন্দৰ্য যেন নতুন ৰূপত উজলি উঠে। চাৰিওফালে সেউজীয়া অৰণ্য, কুঁৱলী আৰু পাহাৰ আৰু মনোৰম জলাশয়ে পৰ্যটকক মুগ্ধ কৰি তোলে। গৰমৰ পৰা কিছুদিনৰ বাবে মুক্তি বিচৰা লোকসকলৰ বাবে নৈনিতাল এক আদৰ্শ ভ্ৰমণস্থলী।

নৈনিতালৰ হৃদয়স্বৰূপ হৈছে নৈনী হ্ৰদ। চহৰখনৰ মাজমজিয়াত অৱস্থিত এই হ্ৰদৰ নীলাভ পানী আৰু ইয়াৰ চাৰিওফালৰ প্ৰাকৃতিক

দৃশ্যই সকলোকে আকৰ্ষণ কৰে। নাওবিহাৰ নৈনিতাল ভ্ৰমণৰ অন্যতম জনপ্ৰিয় অভিজ্ঞতা। সন্ধিয়াৰ সময়ত হ্ৰদৰ পানীত পোহৰৰ প্ৰতিফলন আৰু শীতল বতাহৰ মাজত খোজ কঢ়াৰ অনুভূতি একেবাৰে অনন্য।

ধৰ্মীয় পৰ্যটনৰ ক্ষেত্ৰতো নৈনিতালৰ বিশেষ স্থান আছে। নৈনী হ্ৰদৰ পাৰত অৱস্থিত মনো দেৱী মন্দিৰ দেশৰ অন্যতম জনপ্ৰিয় শক্তিপীঠ হিচাপে পৰিচিত। প্ৰতিদিনে বহু ভক্তই এই

মন্দিৰত পূজা-অৰ্চনা কৰিবলৈ আহে। আধ্যাত্মিক শান্তি আৰু প্ৰাকৃতিক সৌন্দৰ্যৰ এক অপূৰ্ব সমন্বয় দেখা যায় ইয়াত।

নৈনিতালৰ আন কেইবাটাও দৰ্শনীয় স্থান পৰ্যটকৰ মাজত অত্যন্ত জনপ্ৰিয়। স্ন’ ভিউ পইণ্টৰ পৰা হিমালয়ৰ বৰফাবৃত শৃংগসমূহৰ অপূৰ্ব দৃশ্য উপভোগ কৰিব পাৰি। টিফিন টপ, কেৰ গাৰ্ডেন, ইকো কেৱছ আৰু গৰ্ণৰ হাউচ আদি স্থানসমূহেও পৰ্যটকৰ মন জয় কৰে।

স্থানীয় বজাৰসমূহো নৈনিতালৰ এক বিশেষ আকৰ্ষণ। বিখ্যাত মল ৰোডত সন্ধিয়াৰ সময়ত ভ্ৰমণৰ এক সুকীয়া আনন্দ আছে। ইয়াত পাহাৰীয়া হস্তশিল্প, মমৰাতি, উলৰ বস্ত্ৰ আৰু স্মৃতিচিহ্ন ক্ৰয় কৰিব পাৰি। খাদ্যৰ ক্ষেত্ৰতো নৈনিতাল বিশেষ। স্থানীয় সুস্বাদু ব্যঞ্জন যেনে আলুৰ গুটকা, ভট্টৰ চুড়কাণী আৰু বিখ্যাত বাল মিঠাই পৰ্যটকৰ মাজত অতি জনপ্ৰিয়।

"The future belongs to those who prepare for it today."

-Malcolm X

JAN JAN VICHAR

Guwahati, Friday, 19 June 2026

8.25% EPF Interest Rate for FY 2025-26

India Tightens Crackdown on Illegal Infiltration, Bangladesh Raises Concerns

Jan Jan Vichar

...New Delhi

India's ongoing efforts to identify and deport illegal immigrants have become a major point of discussion between New Delhi and Dhaka, with border security, demographic concerns and citizenship verification emerging as key issues in recent weeks.

The developments come amid intensified action by Indian authorities against individuals allegedly residing in the country without valid documentation. The issue has gained particular attention in border states such as West Bengal, Assam, Meghalaya and Tripura, where security agencies continue to monitor cross-border movements.

According to reports, the matter was discussed during recent talks between India's Border Security Force (BSF) and Bangladesh's Border Guard Bangladesh (BGB). Bangladesh reportedly expressed concerns over the return of individuals identified as illegal migrants, while India emphasized the need for verification and repatriation of persons found to be Bangladeshi nationals.



Assam's Aadhaar Decision

In a move aimed at strengthening identity verification, the Assam government recently announced stricter procedures for issuing Aadhaar cards to adults. Chief Minister Himanta Biswa Sarma stated that applicants above the age of 18 would be subjected to enhanced scrutiny before receiving Aadhaar documentation.

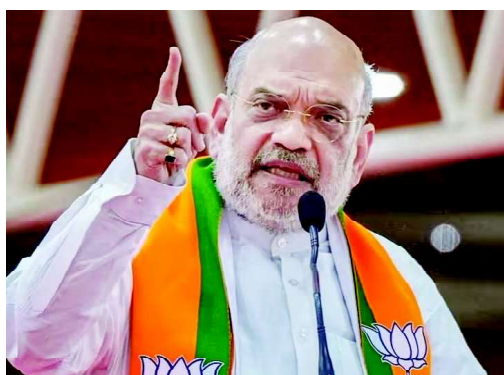
The state government argues that the measure is intended to prevent illegal migrants from obtaining official identity documents through fraudulent means. The decision has generated widespread debate and is being viewed as part of a broader effort to address concerns over unauthorized migration.

Security Agencies Intensify Vigilance

Security agencies across the Northeast have also stepped up surveillance along vulnerable stretches of the international border. In Meghalaya, authorities recently detained several suspected Bangladeshi nationals who allegedly failed to produce valid citizenship documents. Investigations into such cases remain ongoing.

Meanwhile, reports indicate that Bangladesh has increased monitoring activities in some border regions adjoining India. Border management remains a sensitive issue for both countries, which share a land boundary of more than 4,000 kilometers.

Demographic Concerns Under Review



The Union Ministry of Home Affairs has constituted a high-level committee to study demographic changes in border districts, metropolitan areas and indus-

trial centers. The committee has been tasked with examining factors contributing to population shifts, including illegal migration and other abnormal demographic trends.

Union Home Minister Amit Shah has described demographic changes as a matter linked not only to national security but also to social stability, law and order, and the protection of indigenous communities.

Experts believe that the committee's findings could influence future policy decisions on border management, citizenship verification and migration control.

New Delhi : In a major relief for salaried employees, the Central Government has approved an interest rate of 8.25 percent on Employees' Provident Fund (EPF) deposits for the financial year 2025-26. The approval comes after a proposal by the Central Board of Trustees (CBT), the apex decision-making body of the Employees' Provident Fund Organisation (EPFO).

According to official sources, the Ministry of Finance has given its consent to retain the 8.25 percent interest rate for the third consecutive year. Following the approval, more than seven crore EPF subscribers are expected to receive the credited interest in their provident fund accounts within this month.

The decision was originally taken during a CBT meeting held on March 2, 2026, under the chairmanship of Union Labour Minister Mansukh Mandaviya. The board recommended maintaining the existing interest rate, citing the EPFO's strong financial performance and commitment to safeguarding subscribers' savings.

EPF interest can be credited only after formal approval from the Finance Ministry, as the Government of India guarantees EPF deposits. With the latest clearance, EPFO is expected to begin the process of transferring the interest amount to subscribers' accounts shortly.

ASSAULT ON WOMAN ENTREPRENEUR SHOCKS ASSAM

Jan Jan Vichar

...North Lakhimpur

A brutal mob assault on a young woman entrepreneur in Assam's Lakhimpur district has triggered widespread outrage, raising serious concerns about women's



safety, law enforcement, and the state's efforts to encourage reverse migration.

Three days after 24-year-old Pujashree Gogoi Bora was allegedly assaulted, stripped, and publicly humiliated by a mob at Kona Nadi along Na-

tional Highway-15, four of the five accused named in the FIR remain at large.

Pujashree, who had recently returned from Bengaluru with her husband Ankur Bora to establish a small roadside

Continued on Page 16

Zubeen Garg Mural Row Sparks Debate on Public Art, Identity and Urban Beautification

Jan Jan Vichar

...Guwahati

The removal of a mural depicting Assamese music icon Zubeen Garg from a pillar of the Ganeshguri flyover has triggered a wider debate across Assam on public art, cultural identity, civic regulations and urban beautification.

The mural, painted by artist Marshall Baruah and carrying the slogan 'Comrades Never Die,' had become a familiar landmark for many commuters in Guwahati. Its recent removal during ongoing city beautification works ahead of the visit of the Japanese Prime Minister has drawn strong reactions from artists, cultural activists, and admirers of Zubeen Garg.

Expressing disappointment, Marshall Baruah described the artwork as more than a



painting, calling it a reflection of the emotions and identity of the Assamese people. He questioned why a tribute to one of Assam's most celebrated cultural figures had to be removed and initially announced plans to repaint the mural. However, reports suggest that police advised

him against proceeding with the proposed repainting.

The controversy deepened after Garima Saikia Garg, wife of Zubeen Garg, shared an emotional social media post. While expressing sadness over the removal, she stated that no painting could erase the place the

singer occupies in the hearts of the people. She remarked that while the image may have been removed from a wall, the artist's legacy remains deeply rooted in the minds and emotions of his admirers.

The incident has also revived a broader discussion about the role of public art in society. Commentators have pointed out that murals and graffiti have historically served as powerful mediums of cultural expression, public memory and social dialogue. Across the world, walls have often become canvases through which communities express identity, resistance and collective emotions.

At the same time, civic authorities are tasked with maintaining public infrastructure and implementing urban development plans. The ongoing beau-

tification drive in Guwahati includes road repairs, drainage cleaning and repainting of public structures as part of preparations for high-profile international engagements.

The Zubeen Garg mural controversy has therefore evolved beyond a single artwork. It has raised important questions about how cities balance modernization with cultural expression, and how public spaces can accommodate both civic planning and community sentiment.

While opinions remain divided, one point appears to unite all sides: Zubeen Garg's contribution to Assamese music and culture remains unquestioned. The debate now centres not on the artist himself, but on how a society chooses to preserve and celebrate its cultural symbols in changing urban landscapes.

Assam Announces Four Recipients of Prestigious Cultural Honours

Jan Jan Vichar

...Guwahati

The Assam Government has announced the names of four distinguished personalities who will be honoured with some of the state's most prestigious cultural and social awards for their remarkable contributions to art, culture, literature, and social harmony.

The awards will be presented during the state-level celebration of Bishnu Rabha Divas at the Srimanta Sankardeva Kalakshetra on June 20.

Cultural Affairs Minister Bimal Bora announced that the Kalaguru Bishnu Rabha Award 2024 has been conferred on renowned Vaishnavite dance guru Manik Borbayan in the dance category and eminent artist

Madhursudhon Das in the fine arts category.

The Ajan Peer Award 2025, a national-level honour recognizing efforts towards communal harmony, national integration, and cultural advancement, will be presented to Samsuddin Ahmed, a noted artiste associated with All India Radio. Ahmed has been widely appreciated for promoting social har-

mony through culture and the arts.

Meanwhile, Gita Upadhyay, a recipient of the Padma Shri and the Sahitya Akademi Award, has been selected for the Sati Sadhani Award 2026. The award is conferred once every three years to individuals who have made exceptional contributions in the fields of social service, literature, art, and culture.

Continued from Page 15

ASSAULT ON WOMAN...

food outlet, says she is struggling to overcome the trauma of the incident.

"I came back home seeking security and a better future. Instead, I have been stripped of my honour and dignity," she said while demanding strict punishment for all those involved.

According to police records, the victim named five individuals in her complaint. While one accused, Harakanta Chayengiyah, was arrested on June 15, the remaining accused - Tulsi Payeng, Paplu Payeng, Tutu Kaman, and Zerifa Kaman -

have not yet been apprehended.

The incident has sparked criticism from civil society groups and women's rights activists, who have questioned why all accused have not been arrested despite video footage of the assault circulating on social media.

The case has also cast a shadow over Assam's reverse migration narrative. For years, the state government has encouraged skilled Assamese youth working outside the state to return home and invest in local entrepreneurship. However, the Kona Nadi incident has exposed the challenges faced by returnee entrepreneurs attempting to rebuild their lives in rural Assam.

Beyond the criminal act itself, the episode

raises larger questions: Can women feel safe pursuing business ventures in their own villages? Are local entrepreneurs receiving adequate protection? And what message does this incident send to thousands of Assamese youths considering a return home?

As public anger grows, the demand is no longer limited to arrests. Citizens are seeking a clear signal that crimes against women will be met with swift justice and uncompromising action.

For Pujashree Gogoi Bora, justice delayed is not merely a legal issue-it is a test of society's commitment to protecting the dignity and rights of women.

Modi Warns of AI Risks

Jan Jan Vichar

...New Delhi

Prime Minister Narendra Modi has issued a strong warning about the potential dangers of Artificial Intelligence (AI), cautioning that without adequate safeguards, the technology could expose children to misinformation, deepfakes, cyber fraud and exploitation.

Addressing a special session on 'Safe, Secure and Effective AI Implementation' during the G7 Summit in France, Modi urged the global community to work together to ensure that AI serves humanity rather than becoming a tool for manipulation and abuse.

'Digital platforms should become a playground for learning, not a means of influencing and



misleading children,' the Prime Minister said.

Highlighting both the opportunities and risks associated with AI, Modi noted that the technology can revolutionize education by teaching children in their native languages, enhancing creativity and providing personalized learning experiences. However, he warned that the same technology can become dangerous if deployed without ethical safeguards and responsible governance.

'The difference lies

not in technology itself, but in our values, design and governance,' Modi said, emphasizing the need for a clear and human-centric approach to AI development.

The Prime Minister stressed that the true measure of AI's success should not be the power of machines, but the extent to which ordinary people benefit from it. According to him, AI should expand human capabilities, increase opportunities and protect human dignity.

Rebuild Trust first Saudi Arabia to Iran

Jan Jan Vichar

...Vienna/Riyadh

Saudi Arabia has made it clear that any major economic engagement with Iran will depend on the restoration of trust and credible assurances regarding Tehran's nuclear programme.

Speaking at an international policy forum in Vienna, Saudi Foreign Minister Prince Faisal bin Farhan welcomed the emerging understanding between the United States and Iran, describing it as a potentially significant step toward reducing tensions in the Middle East. However, he stressed that long-term regional stability would require strict monitoring and verification of Iran's nuclear activities.

'The most important issue remains the nuclear



file,' Prince Faisal said, emphasizing that any agreement must include robust verification mechanisms to ensure compliance and build confidence among regional states and the international community.

His remarks come amid reports of a proposed multi-billion-dollar economic framework involving Iran. Asked about reports concerning a possible \$300 billion fund, the Saudi minister said he was unaware of the details and declined to comment on the proposal.

Elon Musk Creates History, Becomes World's First Trillionaire

Jan Jan Vichar

...California

Entrepreneur and technology visionary Elon Musk has achieved another historic milestone by becoming the world's first trillionaire. The landmark achievement comes after the highly successful public listing of SpaceX, which triggered a sharp rise in the company's share value and significantly boosted Musk's personal wealth.

According to market reports, shares of SpaceX surged by nearly 11 percent following its initial public offering (IPO), pushing the company's market valuation beyond \$2.18 trillion. The rally added hundreds of billions of dollars to Musk's net worth, placing him in an entirely new category of wealth and making him the first individual in history to cross the trillion-dollar threshold.

Musk's business em-

From College Dropout to Global Icon



Musk's journey is one of the most remarkable success stories of the mod-

ern era. After leaving college early to pursue entrepreneurial ventures, he founded and invested in a series of companies that reshaped multiple industries. His rise from a young entrepreneur with bold ideas to the world's richest individual has inspired millions across the globe.

In 2021, Musk surpassed Amazon founder Jeff Bezos to become the world's wealthiest person. Five years later, he has crossed yet another historic milestone by entering the trillionaire club-a category that, until now, existed only in speculation.

pire extends far beyond SpaceX. He remains a major shareholder in Tesla, the world's leading electric vehicle manufacturer, while also holding significant stakes in Neuralink and The Boring Company. Together, these ventures have transformed him into one of the most influential figures in technology, transportation, artificial intelligence, and space explo-

ration.

A Vision Beyond Earth

For Musk, however, wealth has never been the ultimate goal. The billionaire entrepreneur has repeatedly stated that the primary purpose of taking SpaceX public is to raise capital for ambitious long-term projects. These include expanding satellite-based communication networks, developing large-scale space in-

frastructure, and ultimately establishing a permanent human settlement on Mars.

Musk has often described humanity's future as a 'multi-planetary civilization,' arguing that long-term survival depends on expanding beyond Earth. SpaceX's reusable rocket technology and ongoing Mars missions form the foundation of this vision.

Looking Toward the Future

Even after achieving unprecedented financial success, Musk continues to focus on transformative technologies. His companies are at the forefront of electric mobility, artificial intelligence, brain-computer interfaces, underground transportation systems, and space exploration.

With plans to build a city on Mars, expand AI capabilities, and revolutionize global connectivity, Musk's ambitions remain as expansive as ever. His latest achievement not only marks a personal triumph but also highlights the growing influence of technology-driven enterprises in shaping the future of humanity.

As the world's first trillionaire, Elon Musk has once again demonstrated that bold vision, innovation, and relentless execution can redefine the limits of what is possible.

Borders Under Siege

The recent abduction of an Indian farmer from within Indian territory in Assam is not merely a border incident—it is a warning signal. When foreign infiltrators can cross the border, kidnap a citizen, and retreat across the frontier, the issue transcends illegal migration and enters the realm of national security.

For decades, illegal infiltration from Bangladesh has been treated by many as a political debate. Today, it stands exposed as a security, demographic, and

governance challenge. From Assam to Gujarat, from West Bengal to Gurugram, investigations are revealing an extensive network of agents, document forgers, employers, and facilitators who profit from illegal entry and settlement. Such networks weaken the rule of law and compromise the nation's internal security.

A sovereign nation cannot afford porous borders or selective enforcement. Compassion for genuine refugees cannot become a cover for organized infiltration. Every illegal entrant undermines the rights of lawful citizens and places additional pressure

on public resources, employment opportunities, and social harmony.

The ongoing crackdown must not remain a temporary campaign. It should evolve into a sustained national policy focused on detection, verification, deportation, and the dismantling of infiltration networks. Border security is not merely about fences and patrols; it is about protecting national identity, sovereignty, and the confidence of every citizen.

A nation that fails to secure its borders eventually risks losing control of its future.

Give-and-take shapes India-US ties

Jan Jan Vichar

...✍️ Manoj Joshi

The 52nd summit of the Group of Seven (G7) in Évian (France) is consequential for the world and also for India. The event has come at a time when the world, turned upside down by the Trump tornado, is trying to regain its footing. And within this storm is India's own field of turbulence with the US. That Prime Minister Narendra Modi's first meeting with US President Donald Trump since February 2025 came with a firm handshake - rather than the trademark hug - said it all.

India was an outreach partner of G7 from 2003 to 2009. Later, it was again invited by France in 2019 and has since been a consistent invitee. The French connection has been special; this time round, it has seen PM Modi being given a position of prominence next to Trump and the host President Emmanuel Macron at the outreach meeting.

The G7 has a large agenda of its own - geopolitical conflicts and security, economic imbalances and supply chain disruptions, energy transition and climate change, global health and development, trade, global stability, energy issues, AI and cybersecurity. With Trump in the picture, they are hardly a politically united grouping, but the summit is an invaluable forum for world leaders, even though China and Russia are missing.

But the Indian focus has been on the Trump-Modi meeting after a 16-month period that has seen the India-US relationship reach a nadir of sorts. Relations between the two countries soured following Trump's repeated claims that he had helped broker

a ceasefire between India and Pakistan in May 2025 following the four-day war. Thereafter, two tranches of tariffs, one on account of India buying Russian oil, made India among the most tariffed countries.

For these reasons, Modi has been avoiding a direct meeting with Trump. He refused the US President's invitation to visit Washington DC following the 2025 G7 summit in Canada. He skipped the ASEAN summit in Kuala Lumpur. He also avoided the Gaza Peace Summit in Sharm El-Sheikh last October, hosted by Trump and Egyptian President Fattah El-Sisi.

Tuesday's meeting between the two leaders was a brief encounter followed by Modi's outreach speech that Trump heard attentively sitting next to him. The two leaders had a more substantive bilateral meeting on Wednesday evening.

The PM's remarks highlighted the interconnections in a world where energy, food, health, cyber and economic security are intertwined. He said the Global South sought equal partnerships based on trust rather than a traditional donor-recipient mindset and called for lasting solutions to the regional conflicts through dialogue, diplomacy and international cooperation.

But Modi's main message for Trump was contained in his remarks on the impact of disruptions to maritime trade through the Strait of Hormuz on the global economy. With an eye on his domestic audience, he also referred to the loss of Indian lives there. He said that the protection of seafarers was a collective responsibility since they connected nations through global trade. Modi underscored his subliminal

message to Trump by declaring that "mutual trust is the most important strategic asset today."

Trump must have heard what the Prime Minister had to say, but it's unlikely that it registered with him that "trust" somehow related to him and that most Indians blame trigger-happy Americans for the death of three seafarers.

As per reports, the issue of seafarers' safety was raised at the Trump-Modi meeting. With a touch of generosity, the PM claimed that India-US relations had "gained new momentum, new energy".

His most important task was to get Trump to send a clear and favourable signal that both leaders were committed to sealing the first tranche of their trade deal next week. On June 23-24, American negotiators led by US Trade Representative Jamieson Greer will meet their Indian counterparts, led by Commerce Minister Piyush Goyal, to resolve the remaining sticky issues, including those related to tariffs on agriculture, dairy and increased US energy exports to India.

This will be the first tranche of their trade agreement that will set the stage for their economic relationship being firmed up through a Bilateral Trade Agreement. It is important for India to push back now against the protectionist Section 301 proceedings that have suddenly come up and could add 12.5% tariff to Indian goods.

The G7 Summit and the high-powered meetings come at a time when the India-US relationship is in need of a reset. The bruises from the past 16 months — Trump's India-Pak ceasefire grandstanding, the tariff escalation, the deaths of Indian seafarers in American strikes - will not

heal easily. But both sides have structural incentives to move forward. Washington needs a credible democratic partner in the Indo-Pacific as it manages its rivalry with China, and New Delhi needs American technology, capital and strategic cover as it navigates an increasingly contested neighbourhood.

The Modi-Trump bilateral at Évian was, therefore, less about warmth than about utility - a transactional recalibration by two leaders who have understood that their interests, however differently weighted, continue to converge.

The immediate test will be whether the Évian encounter imparts the political momentum required for the trade negotiations to produce a workable first tranche. India enters those talks carrying a structural disadvantage: the clock is running, the Americans know it, and Washington's negotiators have shown little inclination to soften their positions on agriculture, dairy or the Section 301 proceedings.

On Wednesday, there was another not-so-good signal to India — the US Indo-Pacific Command (USINDOPACOM) will revert to its earlier name, US Pacific Command (USPACOM). It was during President Trump's first term that the name was originally changed in 2018 to signal the US commitment to an Indo-Pacific strategy.

Beyond the trade deal, the larger strategic canvas matters. India's ability to position itself as an indispensable partner in spheres such as AI governance, critical minerals' supply chains and Indo-Pacific security will continue to shape the India-US relationship. But it will be on a different, more transactional and perhaps difficult plane.

Jan Jan Vichar

The Student's Corner

Board Exam Focus

Chemistry Around Us

Chemistry is a part of our everyday life. The rusting of iron, digestion of food, burning of fuel, and formation of curd from milk are all examples of chemical reactions.

Chemical Reaction

A chemical reaction is a process in which one or more substances are converted into new substances with different properties. The original substances are called reactants, while the newly formed substances are known as products.

For example, when magnesium ribbon burns in air, it reacts with oxygen to form magnesium oxide, a completely new substance.

Signs of a Chemical Reaction

A chemical reaction can be identified by several observable changes:

- Change in colour
- Evolution of gas
- Formation of a precipitate
- Change in temperature
- Change in state

These changes indicate that a new substance has been formed.

Chemical Equations: The Language of Chemistry

Scientists use chemical equations to represent reactions in a simple and systematic way. A chemical equation shows the reactants, products, and their relative quantities.

Every chemical equation must be balanced because matter can neither be created nor destroyed. This principle is known as the Law of Conservation of Mass.

Teacher's Tip

Do not memorize chemistry blindly. Understand the concept behind every reaction, learn the important definitions, and practice balancing equations regularly. A clear understanding of concepts will help you score high marks not only in HSLC examinations but also in higher studies.

Rameshwar Sharma
CRCC, Kamrup Metro

Chemical Reactions and Equations

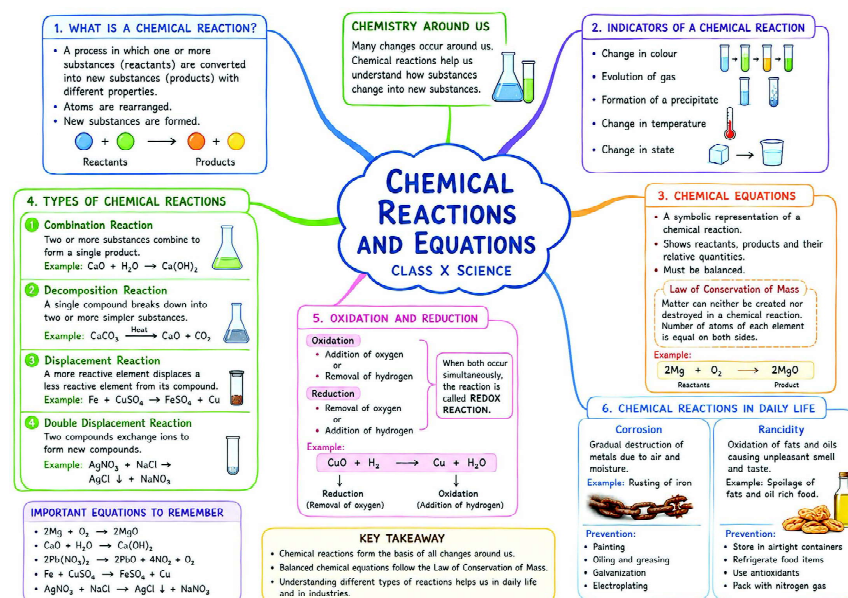
Understanding the Chemistry of Everyday Life

... From the Editor's Desk

Education plays a vital role in shaping society and empowering young minds. Through this educational feature, **Jan Jan Vichar**

aims to support students preparing for the HSLC Examination by providing simple explanations of important topics, examination tips, and practice ques-

tions. In this issue, we begin with Chemical Reactions and Equations, the first chapter of Class X Science and the foundation of chemistry.



Types of Chemical Reactions

1. Combination Reaction : Two or more substances combine to form a single product.

2. Decomposition Reaction: A compound breaks down into simpler substances by heat, light, or electricity.

3. Displacement Reaction: A more reactive element replaces a less reactive element from its compound.

Double Displacement Reaction: Two compounds exchange ions to form new compounds.

Oxidation and Reduction: Oxidation involves the addition of oxygen or removal of hydrogen, while reduction involves the removal of oxygen or addition of hydrogen. **When both occur together, the reaction is called a redox reaction.**

Some Important Questions

1. What is a chemical reaction?
2. State the Law of Conservation of Mass.
3. What is a balanced chemical equation?
4. Define corrosion with an example.
5. What is rancidity? How can it be prevented?
6. Differentiate between oxidation and reduction.
7. Explain decomposition reaction with one example.
8. What is a displacement reaction?
9. Write any two indicators of a chemical reaction.
10. Explain double displacement reaction with an example.
11. An iron nail is dipped in blue copper sulphate solution for some time. After a few minutes, the solution turns green and a reddish-brown layer appears on the nail. Which statement best explains this observation?
 - a) Copper is more reactive than iron and displaces iron from the solution.
 - b) Iron and copper sulphate combine to form a new compound.
 - c) Iron is more reactive than copper and displaces copper from copper sulphate solution.
 - d) The colour change occurs due to evaporation of water.

Next Issue: Acids, Bases and Salts

Chemistry in Daily Life

Corrosion : Corrosion refers to the gradual destruction of metals due to the action of air and moisture. The rusting of iron is the most common example.

Corrosion causes significant economic losses by damaging buildings, bridges, vehicles, and machinery.

Methods to Prevent Corrosion

- Painting
- Oiling and greasing
- Galvanization
- Electroplating

Rancidity: When fats and oils react with oxygen, food develops an unpleasant smell and taste. This process is called rancidity.

Prevention of Rancidity

- Store food in airtight containers
 - Refrigerate food items
 - Use antioxidants
 - Pack food with nitrogen gas
- This is why chips packets are often filled with nitrogen.

GYANPUNJ

ACADEMIC MENTORSHIP CENTRE

— Personalized Learning for Academic Success —

Stronger Roots, Higher Grades

- CLASSES**
1 to 10
- BOARDS**
CBSE & SEBA
(Assam State Board)
- SUBJECTS**
Mathematics | Science | Hindi

WHY CHOOSE US?

- CONCEPT-CLEAR LEARNING**
Build strong fundamentals in Mathematics and Science.
- HINDI LANGUAGE MASTERY**
Focused guidance on Hindi grammar, reading and writing skills.
- EXAM-ORIENTED PREPARATION**
Specialized test series and blueprint practice for SEBA & CBSE patterns.

- SAFE & COMFORTABLE LEARNING**
Quality education in the safe, distraction-free environment of your home.
- INDIVIDUAL ATTENTION**
One-on-One attention or small group focus.
- WEEKLY ASSESSMENT & PROGRESS TRACKING**
Regular tests, assignments and performance monitoring.

ADMISSIONS OPEN FOR 2026-27 SESSION

SCHOOL SYLLABUS COMPLETION

WEEKLY TESTS

BETTER RESULTS & CONFIDENCE BUILDING

FREE DEMO CLASS AVAILABLE

Book a Free Demo Class Today!

LOCATION:
H/ N 87 MADHAVDEVPUR ROAD
NEAR HAPPY CHILD HIGH SCHOOL
REHABARI, GUWAHATI - 781008

CONTACT:
91013 36066, 70023 09416

Personal Attention ★ Strong Concepts ★ Better Results

Assam's 'CHYIMI' Earns Global Acclaim

Jan Jan Vichar

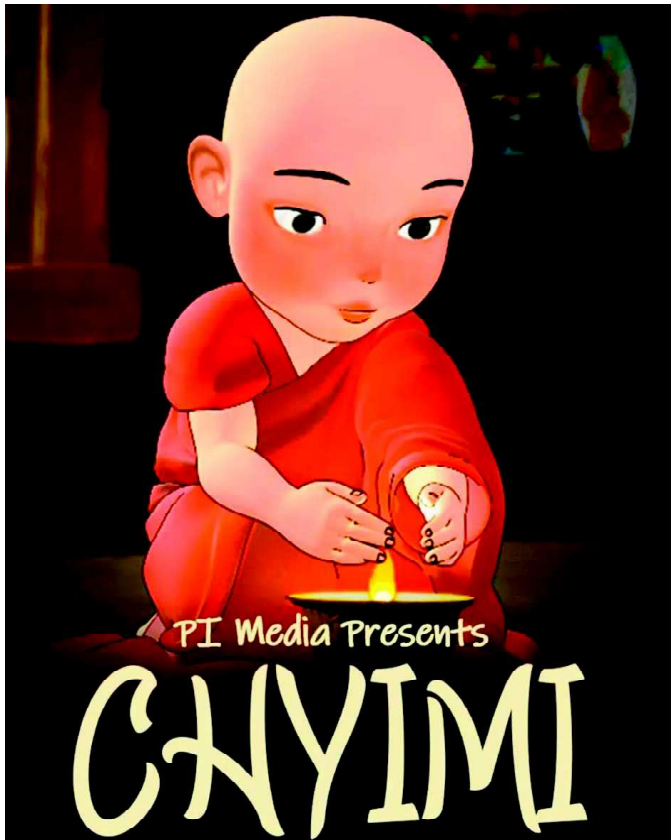
... Guwahati

Assam's growing presence on the global cinematic stage received another boost as Chyimi, an acclaimed animated short film written and directed by Dr. Parthasarathi Mahanta, secured an Honourable Mention in the Best Short Film category at the prestigious Athens Marathon Film Awards in Greece.

The latest recognition marks another milestone in the film's remarkable international journey and further highlights the creative potential emerging from Northeast India.

Chyimi has already earned widespread recognition on the international festival circuit. Earlier, the film won the Best Short Film Award at the Jaipur International Film Festival and later claimed the same honour at the

Animated Short Film Receives Honourable Mention at Prestigious Athens Marathon Film Awards



New York Short Animation Festival, bringing international attention to a

unique storytelling venture from Assam.

The animated short

film is celebrated for its emotional depth, imaginative narrative and artistic excellence. Through animation, the film explores universal human emotions and experiences, proving that meaningful stories can transcend geographical, cultural and linguistic barriers.

Conceived, written and directed by Dr. Mahanta, Chyimi reflects a successful blend of creativity, technical craftsmanship and storytelling. The project was produced by Mina Mahanta and Indrani Baruah, whose contributions played a crucial role in transforming the vision into an internationally recognised work of art.

Expressing his gratitude after receiving the honour, Dr. Mahanta

thanked audiences, jury members and the entire creative team associated with the project. He stated that such recognition encourages filmmakers from the region to continue exploring innovative forms of storytelling and artistic expression.

Film critics and cultural observers view the success of Chyimi as a significant achievement for Assam's creative community. The film's international recognition demonstrates that regional stories, when presented with authenticity and originality, can compete successfully on the world stage.

With awards and recognition from India, the United States and now Greece, Chyimi continues to carry the artistic voice of Assam across global platforms, inspiring a new generation of filmmakers and animators from the region.

When Your Daughter Gets Her First Period

Jan Jan Vichar

... Lifestyle Desk

The first menstrual period is a significant milestone in a girl's life. Yet, in many families, discussions about menstruation remain surrounded by hesitation and silence. Experts believe that parents, especially mothers, play a crucial role in helping daughters understand this natural biological process with confidence and dignity.

The conversation should begin with simple questions to understand what the child already knows. Parents should provide accurate scientific information and explain that menstruation is a normal part of growing up, not a disease or some-

thing to be ashamed of.

Sharing personal experiences can make daughters feel more comfortable and less anxious. Parents should also explain the physical and emotional changes that may occur during puberty, including mood swings, cramps, and hormonal fluctuations.

Equally important is educating girls about menstrual hygiene. They should know how to use sanitary products, maintain cleanliness, and manage periods confidently at school or outside the home. Experts also recommend teaching girls to track their menstrual cycles, which helps them understand their bodies better and identify any irregularities.

Gauranshi Industries



3rd Floor, IIT Road, Jayguru, Amingaon, Kamrup
Assam - 781031, India, Contact : +91-8822420619
E-Mail : gauranshiind@gmail.com, www.gauranshiindustries.com